मणि की परख

(बाल कहानियाँ)

ISBN—81-7016-061-8

प्रकाशाक

प्रकाशक
किताब घर
24/4866, असारी रोड, नई दिल्ली-110 002

प्रथम सस्करण
1990

मूल्य
पेंतीस रुपये

मुद्रक
सजय प्रिंटर्स
मानसरावर पार्क दिल्ली- 32

MANI KI PARAKH (Stories for Children)
by VIMLA RASTOGI Price Rs 35 00

दो शब्द

फूलों से मुझे विशेष लगाव रहा है। उन्हे प्रतिपल खिलते देखना सुखदायी लगता है। अत रग-बिरगे तरह-तरह की गन्ध-सुगन्ध लिए पुष्प मुझे अपनी ओर खीचते रहे हैं। इसी तरह प्रत्येक परिवार की वाटिका मे नित नई मुस्कान बखेरते पुष्प सरीखे बाल गोपालो ने मुझे सदा आकर्षित किया है। बचपन का हरपल मोहक होता है। अपना बचपन तो लौटकर आ नही सकता, लेकिन नन्हें मुन्नों को बचपन की गोद में पलते बढ़ते देख अतुलित पुलक का अनुभव होता है। उनकी उन्मुक्त हसी, क्रिया-कलाप, मनोविज्ञान और मानसिकता को मैं खूब गहरे तक डूबकर सोचती समझती हू और मेरी लेखनी धन्य होती है उनके लिए गीत, कविता, कहानी और नाटक लिखकर।

सच पूछिए तो बच्चो के लिए लिखने में जो आनन्द मिला वह बडा के लिए लिखने से नही मिला। इसीलिए मैंने सबसे ज्यादा बच्चो के लिए लिखा। अक्सर मुझसे पूछा गया – 'बाल साहित्य से इतना लगाव क्यो है, ऐसे प्रश्नकर्ता के लिए मेरा जवाब होता है – 'क्या बचपन के बिना कोई बडा (युवा) हो सकता है। बाल साहित्य आधार है हमारे साहित्य का। बच्चो के लिए सृजन का अपना अलग महत्व है निराला आनन्द है। इस सुस्वाद को बाल साहित्य का रचनाकार ही जान सकता है।

प्रस्तुत बाल कहानी सग्रह 'मणि की परख' मे मैंने आधुनिक मनोविज्ञान, सामाजिक ऐतिहासिक परिवेश तथा जीवन मूल्यो को उजागर करने वाली कहानिया रखी हैं जिससे सभी बच्चे लाभान्वित हो सके। मेरी इन कहानियो मे बच्चो के अन्तर्मन को छुआ तो मैं अकिचन अपने को सौभाग्यशाली समझूगी।

– विमला रस्तोगी

मणि की परख

प्राचीन काल में एक महान प्रतापी राजा थे, विक्रमादित्य। वह बहुत शूरवीर और न्याय प्रिय थे। उनके बुद्धिमानी पूर्ण फैसलों की चर्चा आज भी याद की जाती है। विक्रमादित्य ने भारत पर हमला करने वाले 'शक' राजाओं को पराजित कर उन्हें भारत भूमि से खदेड दिया था। यह उनकी बहुत बडी जीत थी। इसी जीत की याद में उन्होंने सम्वत् भी चलाया था, जो आज भी विक्रम सम्वत् के नाम से प्रसिद्ध है।

विक्रमादित्य की ख्याति चारों तरफ फैली थी। सभी उनको महान राजा कहते थे। इसका असर यह हुआ कि धीरे-धीरे उनके मन मे अभिमान आ गया और वह समझने लगे कि दुनिया की ऐसी कोई समस्या नही जिसको वह हल न कर सके।

अभिमान एक बुरी चीज है। इस दुनिया में एक से एक बडा और बुद्धिमान है इसीलिए हरेक का अभिमान कभी न कभी टूटता ही है और एक दिन राजा विक्रमादित्य के साथ भी यही हुआ।

एक दिन वह दरबार में बैठे हुए थे। वहा उपस्थित विद्वान लोगों में शास्त्रार्थ चल रहा था। उनकी हार जीत का फैसला भी बडी सूझ-बूझ से राजा ही कर रहे थे। तभी पहरेदार ने आकर सूचना दी— 'महाराज एक किसान आपसे मिलना चाहता है।'

क्योंकि विक्रमादित्य के दरबार मे अपनी फरियाद लेकर आने वाले को रोका नही जाता था। इसलिए राजा ने किसान को ही तुरन्त दरबार मे बुला लिया— किसान ने तीन बार झुक कर नियमानुसार राजा को अभिवादन किया। फिर अपनी पगडी की गाठ से एक चमकती हुई मणि निकालकर कहा— "अन्नदाता, मैं कल खेत मे हल चला रहा था कि अचानक मिट्टी में यह मणि मिली। बहुत पहले वहा एक बाम्बी थी जो अब नही है पर लगता है उसमें रहने वाले नागराज की ही यह मणि है।"

मणि को देखकर विक्रमादित्य ने कहा- "जो भी है यह मणि तो तुम्हारी ही है। बहुत मूल्यवान लगती है। इसे अपने पास ही रखो। मुझे क्यों देने आए हो?"

किसान ने यह सुनकर तीन बार फिर राजा के आगे अपना सिर झुकाया और कहा– "महाराज मैं यह जानता हू कि आप प्रजा के पालक हैं। आपको लोभ छू तक नही गया है। किन्तु मैं एक गरीब किसान हू मैंने क्या मेरे पुरखो ने भी कभी मणि नही देखी, जब तक मुझे इस मणि की सही कीमत पता न हो जाए तब तक यह मेरे लिए पत्थर के ही समान है।"

यह सुनकर विक्रमादित्य ने कहा– "तुम किसी जौहरी से जाकर इसका मूल्य पूछो।"

किसान ने सिर झुकाकर कहा– "महाराज, मैं उज्जैयिनी के सबसे बडे जौहरी के पास से होकर ही आया हू। वह इस मणि का सही मूल्य नही आक पाया। इसीलिए उसने मुझे आपके पास भेजा है। अब आप ही बताइए, आपसे अच्छा पारखी और कौन हो सकता है।"

विक्रमादित्य ने मणि को हाथ में लिया, उसे कई बार उलट-पलट कर देखा उसकी चमक से उनकी आखे भी चौंधिया रही थी। एक बार तो उनके मन में आया कि इसका कुछ मूल्य बता ही दिया जाए। लेकिन फिर उन्हें लगा कि बिना सही परख किए मूल्य बताना ठीक नही। मणि की परख उनसे भी नही हो पा रही थी। इसीलिए उन्होंने किसान से कहा– "तुम इसे छोड जाओ। हम इसका सही मूल्य परखकर मणि तुम्हारे पास लौटा देगे।" फिर राजा ने अपने एक सेवक को आज्ञा दी कि वह किसान का नाम और पूरा पता लिख ले। किसान भी जानता था कि राजा के पास उसकी मणि सुरक्षित है तो वह खुशी-खुशी अपने घर लौट गया।

अगले दिन विक्रमादित्य ने राजगुरु को बुलावा भेजा। वह भी मणि पारखी थे। विक्रमादित्य ने अभिवादन कर राजगुरु को मणि दिखाई फिर कहा- "देखिए, कैसी अद्‌भुत मणि है।" इसके बाद उन्होने मणि को लाने वाले किसान से राजगुरु की भेट कराई। मणि पाने के बारे मे जानकारी देते हुए उसका मूल्य पूछा।

राजगुरु देर तक मणि को देखते रहे फिर बोले– "सही मूल्य मैं भी नही बता सकता।"

"तब क्या करना चाहिए? कौन है ऐसा मणि पारखी जो इसका सही

मूल्य बता सके।" राजा ने राजगुरु से पूछा। राजगुरु ने कहा— "यहा से पूर्व दिशा की ओर घना जगल शुरू होते ही एक मुनि की कुटिया है सुना है उन पर तरह-तरह की मणिया हैं वह मणियो के पारखी भी हैं अपनी तपस्या और साधना के बल पर उन्होंने अपने को चमत्कारिक शक्तियों से मुक्त कर लिया है। तुम्हे सही मूल्य जानना है तो मुनि की खोज करनी पडेगी। वही मणि की परख करेंगे।"

दूसरे दिन प्रात ही विक्रमादित्य अपने घोडे पर चढ़ पूर्व दिशा की ओर चल दिए। अपने किसी सहायक को उन्होंने साथ नही लिया। चलते-चलते विक्रमादित्य घने जगल के पास पहुच गए, वहा उन्हें एक कुटिया नजर आई। मौसम अच्छा था वहा का वातारण भी सुहाना था। विक्रमादित्य घोडे से नीचे उतरे और एक पेड से घोडे को बाध दिया।

कुटिया से कुछ ही दूरी पर एक काला, लम्बा, पतला आदमी हाथ में डडा लिए पहरा दे रहा था। विक्रमादित्य को देखते ही वह बोला— "तुम कौन हो? यहा किसलिए आए हो?"

"मुझे मुनिवर से मिलना है।" कहते हुए विक्रमादित्य आगे बढे।

"ठहरिए। आप मुनिवर की आज्ञा के बिना अन्दर नही जा सकते।" कहकर पहरेदार ने डडे से उसकी राह रोक ली।

"तुम मुझे रोकने वाले कौन होते हो" कहते हुए विक्रमादित्य ने पहरेदार को कन्धा पकडकर उसे हटाना चाहा। प्रहरी को छूते ही राजा का शरीर झनझना उठा। उन्होंने फौरन अपना हाथ हटा लिया। प्रहरी ने जमीन पर एक रेखा खीची और कहा—

"देख लिया आपने? आप का मुनिवर की आज्ञा के बिना अन्दर जाना असभव है। मैंने यह रेखा खीच दी है। अगर आप इस रेखा के अन्दर आए तो भस्म हो जाएगे। अब बताइए आप कौन हैं?"

"मुनिवर से जाकर कहिए कि राजा आए हैं" — विक्रमादित्य ने जवाब दिया।

प्रहरी ने विक्रमादित्य से आकर पूछा— "क्या आप राजा युधिष्ठिर हैं?" "नही— लगता है मुनिवर केवल युधिष्ठिर को ही अपना राजा समझते हैं। प्रहरी, उनसे जाकर कहो कि मण्डलिक आए हैं।" प्रहरी ने अन्दर जाकर मुनि से ऐसा ही कह दिया। प्रहरी की बात सुन मुनि ने पुन पूछा— "तो क्या वह रावण है?"

"मुनिवर पूछते हैं कि क्या आप रावण हैं?" प्रहरी ने विक्रमादित्य से आकर पूछा।

"मैं रावण नही हू। आप मुनि से कहें कि कुमार आऐ हैं।" प्रहरी कुटिया में गया, बोला—

"मुनिवर कुमार आए हैं?"

"क्या कहा कुमार? क्या वे कार्तिकेय या लक्ष्मण हैं? पूछकर आओ"।

प्रहरी ने मुनि की आज्ञा मानकर विक्रमादित्य से पूछा—

"क्या आप कार्तिकेय या लक्ष्मण हैं?"

अब विक्रमादित्य को बडी निराशा हुई, उन्होने परेशान होकर कहा— "कृपाकर उनसे जाकर कहिए तलारक्ष आया है?"

प्रहरी तेज कदमों से कुटिया में गया और कहा- "मुनिवर तलारक्ष आए हैं।"

"अच्छा तो विक्रमादित्य आया है। जाओ उसे अन्दर भेज दो।" प्रहरी ने तत्काल विक्रमादित्य के पास आकर कहा— "आप विक्रमादित्य हैं? मुनिवर आपको बुला रहे हैं? आइए?"

अब विक्रमादित्य मन ही मन सोचने लगे कि मुनि ने मुझे राजा, मण्डलिक व कुमार नामों से नही पहचाना 'तलारक्ष' के नाम से पहचान गए जबकि तलारक्ष राजनैतिक उपाधि नही है। इसका मतलब मुनि मुझे युधिष्ठिर, रावण, कार्तिकेय व लक्ष्मण आदि से सबसे छोटा समझते हैं। ऐसा सोचते ही उनका घमण्ड टूटने लगा। विक्रमादित्य कुछ देर के लिए ख्यालो में खो गए।

"चलिए राजन" — प्रहरी के कहने पर उनका सोच-विचार टूटा और वे मुनिवर के दर्शनो हेतु कुटिया में गए।

मुनि आसन पर विराजमान थे। चेहरे पर दिव्य तेज था। विक्रमादित्य ने झुककर मुनि के चरण छुए। मुनि ने उन्हें आसन पर बैठने को कहा, फिर बोले- "मैंने तुम्हारा नाम सुन रखा था, विक्रमादित्य। मैं तुम्हे जानता भी था किन्तु तुम्हारे मन से अभिमान की भावना निकालने के लिए ही मैंने ऐसा किया। घमण्ड की भावना राजा हो या प्रजा सभी के लिए बुरी है।"

"महाराज। मैंने अपनी असलियत समझ ली है। मुझे क्षमा करे। मैंने आपकी बहुत तारीफ सुनी थी, आप बडे मणि पारखी हैं, मैं एक मणि

आपको दिखाने के लिए लाया हू।" इतना कहकर विक्रमादित्य ने मणि मुनि राज को दिखाई।

मुनि ने मणि देखकर कहा— राजन यह साधारण मणि नही है यह पाताल लोक के नागराज की मणि है। तुम इसका मूल्य कैसे जान पाओगे? तुमने मणिया देखी ही नही एक से एक बढ़कर अद्भुत मणिया होती हैं।" इतना कहकर मुनि ने एक थैले में हाथ डाला और मुठ्ठी भर कर मणिया निकाली, एक से एक चमकदार, निराली। विक्रमादित्य एक टक देखते रह गए, मुह से कुछ भी नही बोल पाए— मुनिराज समझ गए,उन्होंने कहा— राजन! लो, यह मणिया अपने हाथ मे लो" मुनिराज ने मणिया विक्रमादित्य के हाथ में दे दी। किन्तु यह क्या? विक्रमादित्य के हाथ मे आते ही मणिया पत्थर बन गयी। विक्रमादित्य को आश्चर्यचकित देखकर मुनि बोले— "देखा तुमने। अभी तक भी तुम्हारे मन का अभिमान खत्म नही हुआ है?"

"महाराज मुझे सही दिशा दिखाइए, मैं आपका आभारी रहूगा।" विक्रमादित्य ने विनय पूर्वक कहा।

"ठीक है। तुम ऐसा करो,जो मणि तुम लाए हो उसे अपनी दायी बाह में बाध लो। जब तक यह तुम्हारी बाह पर बधी रहेगी, तुम्हें घमण्ड नही होगा। तुम बिना किसी भेदभाव के शासन कर सकोगे।"

"जो आज्ञा महाराज। और उस किसान को मणि के बदले में क्या दू।"

"तुम दस हजार स्वर्ण मुद्राए उस किसान को दे दो।"

मुनिराज के उत्तर से विक्रमादित्य सन्तुष्ट हो गए। उनके मन की मलिनता दूर हो गई। उन्होंने मुनि के चरण छुए, आशीर्वाद के रूप में मुनि ने उन्हें कुछ फल दिए।

राजा ने हाथ फैलाकर खुशी से फलों को स्वीकार किया तथा प्रसन्नचित्त अपनी राजधानी लौट गए।

छोटी छोटी बाते

विभा के घर आज गहमा-गहमी थी। मम्मी आज सुबह से ही व्यस्त थी कभी किचिन में, कभी विभा को हिदायते देने मे, कभी पापा को समझाने में। दो बार मम्मी से डॉट पडने पर दस वर्षीया, विभा ने झुँझलाकर कह दिया– "हमारी कजिन विनीता आ रही है कोई अफसर नही।"

"तू तो हमेशा विनीता से कुढ़ती रहती है। भाई साहब का ही दम था, जो भरमूठ पैसा खर्च करके इतने अच्छे स्कूल व होस्टल मे उसका दाखिला कराया हम जैसो के बस की कहाँ?" मम्मी की बात पर विभा को गुस्सा आया, पर चुप रही कौन समझाए मम्मी को कि सबके अत्याधिक लाड के दिखावे ने विनीता की आदते खराब कर दी हैं। विनीता के डैडी यानि मेरे ताऊजी तीन वर्ष से जाम्बिया मे रहते हैं, इसी वर्ष भारत छोड गए हैं। विनीता की खातिर करके सभी रिश्तेदार उसके डैडी पर अपना इम्प्रैशन डालना चाहते हैं। विशेषकर मम्मी तो विनीता पर लट्टू रहती है। उनकी विदेश जाने की बहुत इच्छा है।

विभा को यह सब अच्छा नही लगता था। विदेश की कितनी क्रेज हैं आजकल। विदेश से लौटने वाले को पूरी इज्जत मिलती है।

मम्मी की हिदायतो से तग आकर विभा अपनी सहेली के घर चली गइ। दो घन्टे बाद लौट कर आई तो देखा गाँव से उसके चाचाजी की लडकी गौरी आई हुई थी। "और गौरी, कब आई तुम?" विभा खुशी से उछल पडी। गौरी से उसकी खूब पटती थी।

"डेढ घन्टा हुआ। तुम तो आई नही हम ही मिलने आ गए।"

"मैं कुछ दिनों बाद पापा से जिद करके जरूर आती जाडों मे खेत पर गन्ने खाने तथा गर्मियों में पेड से आम तोडकर खाने में कितना मजा आता है

वहाँ। चल गोरी मुह-हाथ धोकर कुछ खाले। चाचा जी तो काम से चले गए होंगे।

"हाँ"। गोरी ने मुह-हाथ धोया। विभा उसे अपने कमरे में ले गई,मम्मी रसोई मे व्यस्त थी, पापा विनीता को लेने गए हुए थे।

"ले गौरी सफेद रसगुल्ले खा। बगाली मार्किट से मगाए गए हैं। तुझे बहुत पसद हैं न।"

"इतने सारे?"

"चार कोई ज्यादा होते हैं, तुझे पता है मम्मी विनीता को जिद कर करके खिलाती है। अरी खाले फिर न मिलेंगे।"

तभी मम्मी ने विभा को आवाज दे दी। उसी क्षण पापा के साथ विनीता भी होस्टल से आ गई वह छुट्टियों मे जाम्बिया जा रही थी, अगले दिन रात को उसकी फ्लाइट थी। सब विनीता की आवभगत में लग गए, यहाँ तक की छह वर्षीय दीपू ने भी उसे ठडा पानी लाकर पिलाया।

"हैलो गौरी"। बस इतना ही कहा विनीता ने गौरी से। और उगली पर अपनी कैप नचाती हुई दूसरे कमरे मे चली गई।

सभी लोग लगभग खाना खा चुके तो मम्मी विनीता को दूसरे कमरे में फ्रिज के पास ले गई। "ले बेटी बगाली रसगुल्ले खाले तेरे लिए खासकर बगाली मार्किट से मगाए हैं" मम्मी ने डिब्बा खोलते हुए कहा-"अरे इसम से चार रसगुल्ले किसने लिए।"

"मैंने गौरी को दिए थे।" कमरे मे आती विभा ने निडरता से कहा। "एक साथ चार। क्या मैंने उसके लिए मगाए थे।" मम्मी ने गुस्से मे कहा। "ओह! जाने भी दो आन्टी, गाँव की है न, वहाँ उसे बगाली रसगुल्ले कहाँ मिलते होंगे? मैं तो खाती ही रहती हूँ। विनीता ने इतरा कर कहा।" तभी गौरी हाथ में स्टील का छोटा सा लच बॉक्स लेकर कमरे मे आई- "ताई जी यह लीजिए अपने रसगुल्ले, विभा ने मुझे खाने के लिए दिए जरूर थे पर मैंने खाए नही मैं जानती थी कि यह रसगुल्ले विनीता के लिए आए हैं। मैं गाँव से रसगुल्ले खाने नही विनीता से मिलने आई थी" कहकर गौरी ने आँसू पौंछे और कमरे से बाहर निकल गई। उसके पीछे विभा भी। विनीता और मम्मी एक दूसरे को देखती रह गई। सफेद रसगुल्ले स्टूल पर रखे सबका मुह चिढ़ाते रहे। यह छोटी-छोटी बाते कहती हैं — स्वार्थ की कथा।

मखमली तकिए

मुगल काल की बात है। दिल्ली में एक दर्जी रहता था। नाम था दयाराम। बेचारा कुबडा था, मगर हुनरमद इतना कि उसके हाथों की सिलाई देखते बनती थी। उन दिनों सिलाई का काम हाथों से ही किया जाता था।

दयाराम साधारण आदमियों के कपडे नही सीता था। दरबारियो और बादशाह तक उसकी पहुच थी। वह जितना बडा कलाकार था, उतना ही सीधा-सच्चा आदमी भी। भगवान के भजन के बिना उसे चैन नही मिलता था। सदैव भगवान के ध्यान में खोया रहता। एक बार जगन्नाथ पुरी की यात्रा भी कर आया था। वहा जाने की लालसा हमेशा बनी रहती।

एक बार की बात है। बादशाह ने अपने लिए दो बहुमूल्य तकिए बनवाने की सोची। उन्होंने अपनी इच्छा वजीर को बताई। वजीर ने तत्काल कीमती मखमल लाने का हुक्म दिया। देखते-देखते मखमल के थानों के ढेर लग गए। बादशाह ने अपना मनपसद रग चुन लिया। फिर कसीदाकारी करने वालो को बुलाया गया। आवश्यकतानुसार हीरे-मोती उन्हें कढ़ाई के लिए दे दिए गए। कई कारीगर एक साथ कढ़ाई में जुट गए। कुछ ही दिनो में तकिए का कपडा कढ़कर आ गया।

अब तकिए की सिलाई के लिए दयाराम को बुलाया गया। बादशाह जानता था, दयाराम के अलावा कोई दूसरा दर्जी कीमती तकिए अच्छी तरह नही सी सकता। दयाराम को तकिए दे दिए गए।

उसने तकिए पर सिलाई शुरू कर दी। कढ़ाई के अनुसार ही बारीक बखिया के टाके से उसने तगाई की, जिससे तकिए की सुदरता मे चार चाद लग जाए। पूरे मनोयोग से दयाराम तकियों में लगा रहा। जब तकिए तैयार हो गए, तो उसने तकियो के नाप के दो खोल बनाए। सुगंधित रुई उनमे

भरी। सारा घर इत्र की खुशबू से भर उठा।।रुई के तकिए पर उसने कामदार मखमली खोल चढ़ा दिए। अब तकिए पर बने हीरे-मोती के फूल जगमग करने लगे। दयाराम ने उन्हे गौर से देखा। सोचने लगा—"इतने कीमती और सुदर तकिए बादशाह के अलावा और कहा होंगे। अगर इन तकियों के सहारे मेरे भगवान बैठते, तो मैं धन्य हो जाता। मेरी कारीगरी धन्य हो जाती, कितु मेरे ऐसे भाग्य कहा?"

तभी उसे भगवान जगन्नाथजी की रथयात्रा का ध्यान आ गया, जब भगवान की सवारी निकल रही थी। जिस सिहासन पर भगवान विराजमान थे, उनके आसपास भी दो तकिए लगे हए थे।

जगन्नाथजी की रथयात्रा की याद आते ही उसका मन उसी दृश्य मे इतना रमा कि उसे पता ही न रहा, वह दुकान में बैठा है। सपने की अवस्था में उसने देखा, जगन्नाथजी रथ पर विराजमान है। सैकड़ों भक्त उनके रथ को खींच रहे हैं। बच्चे, बूढ़े, जवान सभी जय-जयकार कर रहे हैं। कीर्त्तन हो रहा है। सेवकगण जगन्नाथ जी की सेवा में लगे हैं। सहसा रथ में अटककर जगन्नाथ जी का एक कीमती तकिया फट गया। सेवक मंदिर से दूसरा तकिया लेने दौडे। समय बीतने लगा। सेवक लौटकर नही आए। देर हो रही थी। दयाराम से देखा न गया। उसने पास रखे तकियों में से एक तकिया भगवान के पीछे रख दिया। भगवान ने उसे स्वीकार कर लिया। दयाराम खुशी से नाचने लगा। रथ यात्रा आगे बढ़ने लगी।

तभी दयाराम की पत्नी दुकान पर आई। उसे सोता देखा, तो उसे जगाया। बोली– "दिन में ही सपना देखने लगे क्या?"

"कमला, मैं तो भगवान की रथयात्रा में पहुच गया था। अरे! यहा केवल एक तकिया है?"

— दयाराम ने आश्चर्य से कहा।

"दूसरा कहा गया?"— पत्नी ने भी अचरज से पूछा।

"लगता है, सचमुच ही दूसरा तकिया जगन्नाथजी ने स्वीकार कर लिया।" इतना कहकर दयाराम ने पत्नी को अपना सपना सुना दिया।

एक तकिया भगवान द्वारा ग्रहण किए जाने पर दयाराम दर्जी बहुत खुश था। उसने सोचा— "अब मुझे किसी का डर नही। ज्यादा से ज्यादा बादशाह मेरी जान ले लेगा।" उसके बाद वह भगवान का कीर्त्तन करने लगा। तभी बादशाह के सिपाही वहा आए।

"चलो बादशाह ने तुम्हें तकिए लेकर बुलाया है।"

"अभी चलता हूँ।" कहकर दयाराम दर्जी एक तकिया लेकर उनके साथ चल दिया। पत्नी कमला भयभीत थी। दयाराम ने उसे तसल्ली दी।

दयाराम दरबार मे पहुचा। झुककर बादशाह को सलाम किया। अदब के साथ तकिया दिखाया।

"दूसरा तकिया कहा है?" बादशाह ने पूछा।

"हुज़ूर, वह भगवान जगन्नाथजी को भेंट कर दिया"-- दयाराम ने सहज भाव से कहा।

बादशाह को विश्वास नही हुआ। उसने फिर पूछा। दयाराम ने फिर वही जवाब दिया। बादशाह को क्रोध आ गया। बादशाह ने हुक्म दिया-- "इसने हमारा कीमती तकिया गायब कर दिया। यह अपना कसूर नही मान रहा है। ऊपर से भगवान का नाम लेकर झूठ बोलता है। इसे कैद में डाल दो।"

बादशाह के हुक्म का पालन हुआ। तत्काल सिपाहियों ने दयाराम को हथकडी-बेडी पहनाकर कैद खाने मे डाल दिया। दयाराम ने अपनी सफाई मे कुछ नही कहा।

दयाराम कैद मे भी भगवान को याद करता रहता था।

दो दिन बाद रात को बादशाह ने एक सपना देखा-- एक विशालकाय डरावना व्यक्ति उसके पास आया। उसे देखकर बादशाह डर गया। उस व्यक्ति ने बादशाह के पैर पर अपना पैर रखा, तो बादशाह दर्द से कराह उठा। "तुम जरा से दर्द से कराहने लगे। दयाराम दर्जी की सोचो। वह ईमानदार आदमी है। फिर भी उसके पैरो मे बेडिया और हाथो मे हथकडियाँ पहना दी तुमने?"-- उसने कहा।

"दयाराम ने मेरा कीमती तकिया चुरा लिया। वह अपराधी है।"-- बादशाह बुदबुदाया।

"वह भगवान का भक्त है। उसने चोरी नही की। ठीक ही बताया था, मगर तुम लोभी हो। लो अपना तकिया वापस।" इतना कह, वह व्यक्ति चला गया। बादशाह की नीद सपना देखकर टूट गई। बादशाह ने देखा, पलग पर दो तकिए रखे थे।

"क्या सपना सच था।" इस चमत्कार पर उसे आश्चर्य हुआ। चिडियों के चहचहाने से बादशाह समझ गया, सुबह होने वाली है। उसने दरबान को

आवाज दी। फिर दयाराम को इज्जत के साथ रिहा करने का आदेश दिया।

स्नान कराकर और अच्छे कपडे पहनाकर दयाराम को बादशाह के पास लाया गया। बादशाह बोला– "दयाराम, तुम्हें सजा देने में हमसे भूल हो गई। आज पता चला, तुम भगवान के कितने बडे भक्त हो। देखो, दूसरा तकिया मेरे पास आ गया है।"

दूसरा तकिया देख, दयाराम चकित था। उसने मन ही मन भगवान का प्रणाम किया। बादशाह ने उसे ढेर सारा इनाम देकर विदा किया।

माफ कर दो

अशु चौथी मे और रिकी दूसरी कक्षा में पढ़ती थी। स्कूल से आने से पहले ही मम्मी उनके कपडे, सलाद की प्लेट, गर्म दाल-चावल, फुलके, पापड सब तैयार रखती। यहा तक कि पीने का पानी भी गिलासों मे ढककर रख देती। आते ही दोनों पानी पीते, कपडे बदलते, कभी-कभी थोडा-सा झगडते और मम्मी के साथ खाना खाने बैठते।

ऐसा रोज नही होता था। मम्मी को अक्सर अपनी पढ़ाई के कारण कही न कही जाना पडता था। वह रिसर्च कर रही थी। अपना प्रोग्राम बच्चों को सुबह ही बता देती। कही लौटने में देर न हो जाए, इसलिए गैलरी में बनी एक छोटी अलमारी मे नाश्ता-पानी व कहानियों की किताबें आदि रख जाती।

उनके साथ वाले मकान मे पाचवी कक्षा मे पढ़ने वाला बटू भी रहता था। उसकी मम्मी बटू को बिना बताये अक्सर अपनी सहेलियों के पास चली जाती। देर से आती तो स्कूल से लौटा भूखा-प्यासा बटू मम्मी पर झुझला उठता, "जब देखो कही न कही चली जाती हो। मुझे इतनी तेज भूख लग रही है।"

"पैसे थे तेरे पास, कुछ भी खरीद कर खा लेता। पडोस में अशु व रिकी को देख, मम्मी के पीछे चुपचाप गैलरी में बैठे रहते हैं, हमारे घर भी नही आते।"

"जब देखो उन्ही की प्रशसा। उन्हे ही रख लो न अपने घर में।"

"रखू या न रखू, पर तू कान खोलकर सुन ले, में चौबीस घटे तेरे लिए घर में बधी नही रह सकती। 'पैर पटकती हुई उसकी मम्मी रसोई मे चली जाती है और आधे घटे मे खाना तैयार कर देती है। बटू भिनभिनाता रहता है।

हर समय अशु की प्रशसा सुनते-सुनते बटू को अशु से चिढ़-सी हो गयी उसने एक योजना बनायी।

अगले दिन अशु और रिकी स्कूल से लौटे तो गेट में घुसने से पहले ही रिकी ने कह दिया, "आज मम्मी घर नही है।"

"कैसे जाना?" अशु ने पूछा।

"कमरे की खिडकी भी वद है और कपडे भी वाहर नही सूख रहे।"

"तब तो हमारे लिए खीर रख गयी होगी, सुवह वनाने को कह रही थी।"

बस्ते रखकर उन दोनों ने उस गैलरी की अलमारी खोली तो हैरान। खीर की खाली कटोरी व चम्मच पडे उनका मुह चिढ़ा रहे थे। न कोई फल था, न पानी का गिलास। दोनों को वहुत गुस्सा आ रहा था। तभी वटू आ गया।

"क्या बात है?"

"आज मम्मी हमारे खाने के लिए कुछ भी नही रख गयी।"

"अरे, इन मम्मियों को तो घूमने से ही फुरसत नही।"

"हमारी मम्मी तो पढ़ाई के काम से बाहर जाती हैं।" रिकी मम्मी की बुराई नही सुन सकती थी।

बटू ने उन्हे अपने घर से सतरा लाकर दिया और कहा, "मम्मी न हुआ करें तो मेरे साथ पार्क मे खेलने चला करो।" बटू उन दोनों को ऐसे ही, अपनी योजना के तहत सिखाता पढ़ाता रहा, फिर चला गया।

मम्मी आयी तो बच्चे नाराज थे। अब मम्मी हैरान। वह बच्चो को खीर रखकर जाने का विश्वास दिला रही थी। फिर धीरे-धीरे उन्होने बच्चो को मना लिया और प्यार से खाना खिलाया।

दो दिन बाद मम्मी ने छोटे ताले की दो तालिया दोनो को थमायी और जाने से पहले उस छोटी-सी अलमारी मे खाने का सामान रखकर ताला बद कर दिया। बच्चो ने आकर अलमारी खोली और प्रेम से दोनो ने खाना खाया।

अगले सप्ताह एक दिन मम्मी की अनुपस्थिति में बच्चों ने आकर अलमारी खोली तो दग रह गए। खाने का कोई सामान नही था। गिलास का पानी तक बिखरा पडा था। गुस्से में बच्चो ने बैग वही पटके और घर से चले गये। मम्मी आयी तो अलमारी खुली थी, पानी बिखरा था। जमीन मे पडे बैग और बच्चो को नदारद देखकर चिता मे डूब गयी।

उन्होंने आसपास के घरो में पूछा, वे नही थे। मम्मी भागी-भागी पार्क

गयी वहा नही थे। अब क्या करे? तभी पार्क की दूसरी तरफ से बटू के साथ बच्चे आते दीखे। उन्हें चैन की सास आयी।

मम्मी को देखते ही बच्चे बरस पडे। समझाने की कोशिश बेकार गयी। रिकी पर भी अशु का रग चढ़ गया। गुस्से मे दोनो ने खाना नही खाया, तो मम्मी कैसे खा सकती थी।

यह हरकत भला किसकी हो सकती है? ऐसे तो बच्चे बिगडते जा रहे हैं यही सब सोचते-सोचते मम्मी के सिर में तेज दर्द होने लगा। उन्होने रिकी को पुकारा, "बेटी मेरे सिर मे दर्द हो रहा हे। तुम खाना खा लो फिर मेरा सिर दबा देना। तुम्हारे हाथो से बडा अच्छा लगता है।"

रिकी जानती थी कि ज्यादा सोचने से मम्मी के सिर मे दर्द हो जाता है। उसने अशु से कहा, "भैया, आओ खाना खा लो, हम खाएगे तो मम्मी भी खाएगी। उनकी तबियत ठीक नही है।" फिर इस शर्त्त पर दोनो ने खाना खाया कि अब मम्मी कही नही जाया करेगी।

लेकिन अपनी पढ़ाई के कारण उनका कभी-कभी जाना जरूरी था।

एक दिन मम्मी ने हमेशा की तरह अलमारी मे फल, खीर, पानी वगैरा रखा, ताला बद किया, कमरे और रसोइ मे भी ताला लगाया। फिर चुपके से छत पर चली गयी। वह सतर्क बैठी थी।

दोपहर डेढ़ बजे बटू आया। इधर-उधर नजर डाली— कोई भी नही था। जेब से ताली निकाली, ताला खोला और खीर निकालकर खाने लगा। तभी अशु की मम्मी ने आकर उसका हाथ पकड लिया। वह सिर से पैर तक काप गया।

"तो यह तुम हो।" मम्मी ने एक-एक शब्द पर जोर देकर कहा।

"आटी, मुझे माफ कर दो।"

"बटू, तुम नही जानते, तुमने कितना बडा अपराध किया है और हमें कितना सताया है। हमारे घर की शाति भग कर दी है तुमने। मैं चाहू तो सबके सामने तुम्हें लज्जित कर सकती हू। तुम्हारी मा से "

"मम्मी से न कहना आटी। वह मुझे हर समय वैसे ही डाटा करती हैं। अशु की बडाई करके वह मुझे फटकारती-मारती हैं। मेरे खाने-पीने का ध्यान नही रखती। बस, अशु से बदला लेने की भावना मेरे मन मे आ गयी थी। इसीलिए मैंने यह सब "

"बिना सोचे-समझे तुमने इस तरह हमसे बदला लेना शुरू कर दिया,
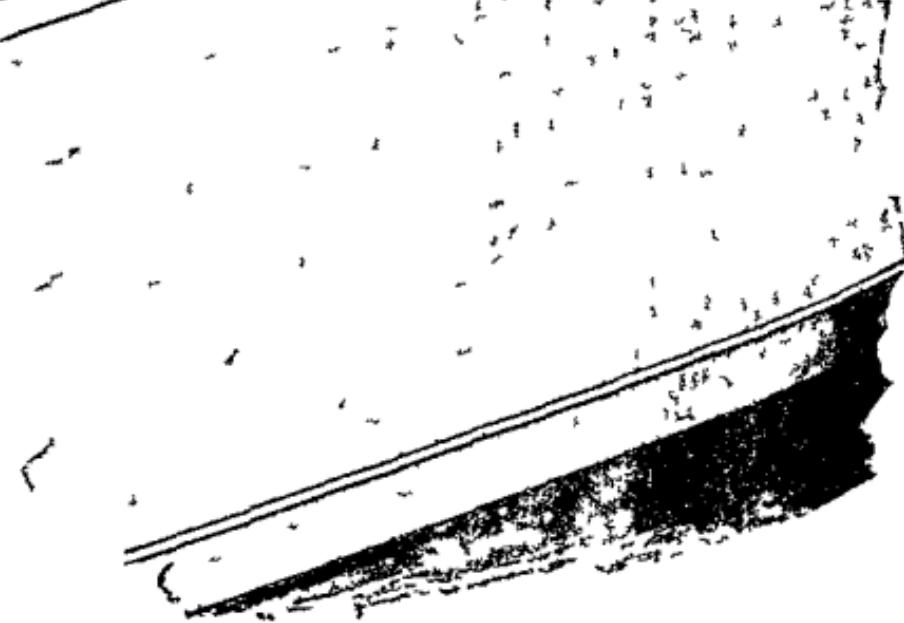
यह अच्छी बात नही। तुम अच्छी आदतें भी सीख सकते थे। जानते हो चोरी करना कितनी बुरी बात है।"

"अब ऐसा नही करूगा आटी।"

इतने में अशु और रिकी भी गये। मम्मी ने सब बाते उन्हे भी बतायी।

"अब याद आया, बटी ने खेल-खेल मे एक दिन मुझसे चाबी ले ली थी, फिर लौटायी नही। हम समझे खो गयी "

बटू अपराधी-सा सिर झुकाए खडा था। अचानक बोला, "अशु, मुझे माफ़ कर दो। मैंने सब कुछ बिना विचारे किया।"

राजा की बीमारी

पुरानी बात है। एक राजा थे सातवाहन। उनकी राजधानी थी प्रतिष्ठानपुर। बडे यशस्वी और शूरवीर थे। अपनी प्रजा की सुख-सुविधा का बहुत ध्यान रखते। प्रजा का जरा-सा भी कष्ट उन्हें बर्दाश्त नही होता था। उनके बल से शत्रु डरते थे। राजा सातवाहन न्याय के लिए प्रसिद्ध थे। न्याय करने से पहले प्रत्येक बात की बारीकी से जाच करते, जिससे अपराधी को ही सजा मिले। वह नही चाहते थे कि उनकी गलती से कोई भी बेकसूर दड पाए।

राजा को शिकार का बहुत शौक था। समय मिलने पर वह शिकार खेलने अवश्य जाते थे। एक बार वह शिकार के लिए गए। सैनिक साथ थे। काफी देर भटकते रहे। मगर कोई शिकार न मिला। शिकार की खोज में काफी दूर निकल गए। दिन ढलने लगा। देखते ही देखते आधी आ गइ। सब एक दूसरे मे बिछुड गए। काले बादल घिर आए, फिर अधेरा हो गया। राजा अदाज से आगे बढ़ते रहे। तभी दूर एक झोंपडी दिखाई दी। राजा ने चैन की सास ली। वर्षा शुरू हो गई थी। राजा आगे बढ़ते रहे। जैसे-तैसे राजा उस झोपडी के निकट पहुचे। द्वार खटखटाया। अदर से एक भील बाहर आया। वह राजा को नही पहचानता था। उसने अतिथि समझकर राजा का स्वागत किया। आदर के साथ उन्हे झोपडी मे बैठाया। रूखा-सूखा जो था, खाने को दिया। भील ने एक कबल भी राजा को दे दिया। गीले कपडे उतारने का आग्रह किया। झोंपडी बहुत ही छोटी थी। दो व्यक्ति उसमें एक साथ आराम नही कर सकते थे। भील ने हाथ जोडकर प्रार्थना की — "आप हमारे मेहमान हैं। भीग गए हैं। जगल में भटकने से थक गए हैं। आप आराम करें। मैं कुछ देर झोंपडी के बाहर खडा हू।"

राजा ने सोचा — "थोडी देर आराम करने के बाद मैं बैठ जाऊगा और इसे भी अन्दर बुला लूगा।" ऐसा सोच, राजा ने भील की बात मान ली।

भील झोपडी के बाहर आ गया। राजा झोपडी मे लेट गए। थकावट के कारण उन्हे गहरी नीद आ गई। भील रात भर बाहर भीगता रहा। दिन निकलने पर राजा की आखे खुली तो हडबडाकर उठे। झोपडी से बाहर आए। देखा, भील जमीन पर पडा है। राजा ने उसे हिलाया-डुलाया, लेकिन वह दम तोड चुका था। राजा को बहुत दु ख हुआ। वह सोचने लगे – "मेरी खातिर इस भील ने अपनी जान दे दी। इसका त्याग महान है। इसकी मौत का जिम्मेदार में हू।" उसी समय सैनिक राजा को खोजते हुए वहा पहुचे। राजा को सकुशल पाकर सैनिको को तसल्ली हुई। राजा ने उन्हे रात वाली पूरी घटना बताई। आदेश दिया – "भील का शव राजमहल ले चलो। कुछ सैनिक इस भील के परिवार की खोज मे जाओ। हमारी जान बचाने के लिए इसने अपनी जान दी है। अब इसके परिवार की सहायता करके, हम अपने पाप का प्रायश्चित करना चाहते हैं।"

"जैसी आज्ञा महाराज।"– कहकर सेनिको ने आदेश का पालन किया। आधे सैनिक भील का शव लेकर राजमहल आ गए। बाकी भील के परिवार की खोज मे चले गए।

महल मे आकर राजा ने सारा किस्सा रानी को सुनाया। रानी भी भील के त्याग से प्रभावित हुई। बडे आदर-सत्कार के साथ भील का अंतिम सस्कार किया गया।

कई दिन बीत गए। धीरे-धीरे सभी सैनिक वापस आ गए। भील के परिवार के किसी भी सदस्य का पता न चल सका।

"हो सकता है महाराज। वह भील बिल्कुल अकेला हो,"– सेनापति ने साहस कर कहा।

"कुछ भी हो, उसकी मौत का जिम्मेदार मैं हू। जब तक इसके परिवार की मैं सहायता न करू, मुझे चैन नही मिलेगा।" – राजा ने बेचैनी से कहा।

"महाराज, इस बात को भूलना ही बेहतर होगा। बहुत खोजने पर भी भील परिवार का पता नही चला है।" मगर राजा उसी तरह परेशान थे।

कुछ दिन बाद राजा स्वय उसके परिवार को ढूढने निकले। उन्हाने अपने साथ किसी भी सहायक को नही लिया। उनके जाने के बाद राज्याधिकारियो के साथ-साथ प्रजा भी चिंतित हो गई। राजा को कही कुछ हो गया, तो क्या होगा? सब इसी आशका से डरे हुए थे। प्रजा की आखे राजा के इतजार मे बिछी थी। राजमहल मे भी सभी बेचैन थे। तरह-तरह की

आशकाओं से रानी का मन परेशान था। तभी राजा के घोडे की टाप सुनाई दी। सबने राहत की सास ली। राजा बहुत थके और उदास दीख रहे थे। चुपचाप घोडे से उतरे। महल की ओर चल दिए। किसी को कुछ पूछने का साहस न हुआ। उस दिन से राजा बहुत कम बोलने लगे। अब वह राजकाज भी ठीक से नही कर पाते थे।

समय बीतता रहा। राजा सातवाहन की चिता कम न हुई। चिता के कारण उनका स्वास्थ्य खराब रहने लगा। राजवैद्य का इलाज किया गया। लाभ कुछ न हुआ। रानी ने मत्री से कहा — "पडोसी राज्य के मशहूर वैद्य को बुलाओ।" मत्री ने आज्ञा का पालन किया। वैद्य आते, राजा को देखते। दवाई देते पर राजा को लाभ न होता। महाराजा की इस नई बीमारी से सभी दु खी थे।

दिन, सप्ताह, महीने बीतते गए। धीरे-धीरे डेढ़ वर्ष बीत गया। मत्री जी को एक अन्य वैद्य के बारे मे सूचना मिली। उन्होने तत्काल राजा से कहा — "महाराज, खबर मिली है कि पडोसी राज्य मे एक अच्छा वैद्य हे ब्रह्मदेव। उसका बडा नाम है। जरूर वह आपकी बीमारी का सही इलाज करेगा। मैं चाहता हू, एक बार आप उसे बुलवाने की आज्ञा दे।"

"अब हम किसी को नही दिखाएगे। परेशान हो गए हैं। हमारी बीमारी ठीक नही हो सकती।" — राजा ने कहा। महामत्री के बार-बार प्रार्थना करने पर राजा ने उसकी बात मान ली। फिर भी राजा ने कहा — "इस बार मैं स्वय वैद्य जी के पास जाऊगा।" बस, राजा दूसरे दिन ही वैद्य के पास पहुच गए।

ब्रह्मदेव ने राजा के आने की बात सुनी, फूला न समाया। दौडा-दौडा आया। आदर के साथ राजा का स्वागत किया। विनम्रता से बोला — "महाराज, आपके पधारने से मैं धन्य हो गया। मेरे योग्य सेवा बताए।"

"सेवा भी बताएगे। पहले यह बताओ, क्या घर मे कोई उत्सव है? बडी रौनक हे।" — राजा ने कहा।

"हा, महाराज! वर्षों बाद मुझे पुत्र की प्राप्ति हुई। जब उसका जन्म हुआ, मेरी पत्नी बहुत बीमार हो गई। मैंने कोई खुशी नही मनाई।"

"तो अब दावत कर रहे हो?" — राजा ने कहा।

"हा, महाराज! बेटा नौ महीने का है। अब उसका नामकरण हो रहा है। कैसा सयोग है, इस शुभ अवसर पर आप पधारे। मैं धन्य हो गया।"

"चलो, पहले तुम्हारे बेटे को आशीर्वाद दे दे।" — कहकर राजा उठे।

"आइए, महाराज!" — ब्रह्मदेव राजा को अपने बेटे के पास ले गया। बेटा अपनी मा की गोद मे लेटा था। आसपास अन्य स्त्रिया भी बैठी थी। राजा के आते ही सब खडी हो गईं। राजा ने उनसे बैठने को कहा। ब्रह्मदेव का बेटा राजा को देखकर हसा। फिर बोला — "महाराज को नमस्कार।"

इतने छोटे बच्चे को बोलते देख, सब आश्चर्य मे पड गए।

"आप नही पहचानते महाराज! मैं वही भील हू, जिसने आपको झोपडी में ठहराया था।"

"ओह, तुम ही वह पुण्यात्मा हो, जिसने मेरी खातिर अपने प्राण त्यागे। मैं कब से तुम्हारे ऋण से मुक्त होने का प्रयास कर रहा हू।" — राजा ने कहा।

"हा, मेरा त्याग बेकार नही गया महाराज! उस त्याग की वजह से ही मुझे यहा जन्म मिला और पहले जन्म की बातें याद रही। ऋण तो आपका चुक गया।"

"आज मेरे मन का बोझ हल्का हो गया।" — राजा ने कहा। सारे लोग आश्चर्यचकित उनकी बातें सुन रहे थे।

"महाराज, अब आप वैद्य जी को अपनी बीमारी बताइए।" — मत्री ने कहा।

"अब मुझे कोई बीमारी नही। आज मैं इस बालक से मिलकर बहुत खुश हू।" — राजा ने मुस्कराते हुए कहा। उसके बाद राजा ने उपहार मे बच्चे को बहुत-सा धन दिया। फिर खुशी-खुशी अपनी राजधानी लौट आए।

अंधेरे से उजाले मे

पारिजात आठ वर्ष का सुन्दर व स्वस्थ लडका था। पढ़ाई में भी होशियार था। वह एक कस्बे मे रहता था। उसके पापा की फैक्ट्री थी। वहा मान-सम्मान प्रतिष्ठा सभी कुछ था, इसी से वे किसी बडे शहर में जाकर बसना नही चाहते थे। अभी तक वहा का कोई बच्चा शहर मे पढ़ने नही गया था। "नैनीताल के एक अच्छे स्कूल में पढ़ने जाने वाला पारिजात इस कस्बे का पहला बालक होगा" – इस बात का उसके पापा को बडा गर्व था। पारिजात के सामने भी उनके मुह से बरबस निकल पडा, "बेटे! तुम यहा से इतने अच्छे स्कूल में जाने वाले पहले बच्चे हो, प्रवेश परीक्षा के लिए पूरी तैयारी करके जाना। सिर्फ चार दिन बाकी हैं। जो कमी रह गयी हो पूरी कर लेना।"

पारिजात के मम्मी-पापा उसकी हर जिद पूरी कर देते थे। इससे पारिजात बहुत जिद्दी तथा घमडी हो गया था। वह किसी से नही डरता था। अपने व्यवसाय में व्यस्त रहने के कारण पापा उसे समय नही दे पाते। उन्होने बच्चो के व्यवहार तथा आचार-विचार पर ध्यान देने की कभी जरूरत भी नही समझी।

पारिजात नैनीताल के स्कूल के टेस्ट मे पास हो गया, स्कूल से आयी सामान की लिस्ट के अनुसार तैयारिया होने लगी। मम्मी व्यस्त रहने के साथ-साथ उदास दिखायी देखी थी। उनके लिए पारिजात से अलग रहने की कल्पना भी दुखद थी। उसके उज्जवल भविष्य की बात सोचकर वह मन को दिलासा देती। शुरू-शुरू मे पारिजात ने भी होस्टल मे रहने से नानुकर की, लेकिन मम्मी-पापा के बार-बार समझाने तथा नये खिलौनो के लालच में वह मान गया। उसके मनपसन्द सभी खिलौने आ गये। नियत दिन पापा सपरिवार पारिजात को होस्टल छोडने गये। रास्ते मे मम्मी उसे हिदायते

देती रही, "अपने खाने-पीने मे लापरवाही न करना। वहा बार-बार खाने को कोई नही कहेगा। खाने की घण्टी बजते ही सबके साथ कायदे से खा लेना। अगर ढग से नही खाएगा तो पढ़ेगा कैसे?"

पारिजात को स्कूल मे पहुचाकर सब लोग वापस आ गये। पत्रो के सहारे समय बीतता गया। जाडे की छुट्टिया होने वाली थी। निश्चित तारीख पर पापा उसे लेने चले गये। अगले दिन मम्मी सुबह तडके जागी। नोकर को भी जगा दिया। घर की सफाई कराके मम्मी पारिजात की मनपसन्द चीजे बनाने में लग गयी। बीच-बीच में पारिजात की बहनो — रेणु व नन्दा — से कहती जाती, "भैया कई महीने बाद घर आ रहा है। उससे लडना मत। उसका कहना मानना।"

"क्यो? वह कोई लाटसाहब है?" रेणु ने फटाक से जवाब दिया। "बहुत बोलने लगी है। चल, भाग यहा से, काम करने दे।" मम्मी ने वही बात खत्म कर दी।

पारिजात के आते ही घर भर मे रोनक आ गयी। उसके बाद मम्मी के दुलार-प्यार का क्या कहना, उससे पूछकर नाश्ता व खाना बनता , उससे समय पर सोने, उठने या जागने को नही कहा जाता। फिर क्या था, वह अपने ही घर में अपने को मेहमान समझने लगा।

फरमाइशो के साथ-साथ उसकी जिदे भी बढ़ने लगी। उसके जागने, नहाने, खाने का कोई निश्चित समय नही रहा। घर के बूढे नौकर रामदीन ने भी एक दिन कहा, "बीबीजी, दिन चढ़ आया। धूप फैली गयी, पारिजात बाबू अभी तक सोते हैं। वहा स्कूल मे कैसे जागते होगे?"

"हा! आजकल सुबह बहुत देर से उठने लगा है, कहो तो सुनता ही नही। काका, तुम धूप मे कपडे फैला दो। मैं उसे जगाती हू।" कहकर मम्मी पारिजात को जगाने गयीं लेकिन वह नही जागा।

अगले दिन पारिजात ने मम्मी से कहा —

"मुझे आज ही वीडियो गेम चाहिए।"

"होस्टल जाने से पहले इतने खेल दिलाये थे। उन्ही से खेलो।" मम्मी ने समझाया।

"नही, मुझे आज, अभी, वीडियो गेम चाहिए।" पारिजात ने जोरदार जिद करते हुए कहा।

"यहा नही मिलेगा, मेरठ जाएगे तो दिला देगे।"

''तुम और पापा हमेशा इसी तरह टाल देते हो।

जब तक वीडियो गेम नही दिलाओगी मैं खाना नही खाऊँगा।'' कहकर पैर पटकता हुआ वह अपने कमरे मे चला गया। बिस्तर पर लेटकर कहानी की किताबे पढने लगा। मम्मी ने सोचा, कुछ देर मे दिमाग शान्त हो जाएगा लेकिन पारिजात का गुस्सा शाम तक नही उतरा। मम्मी के बार-बार कहने पर भी उसने दोपहर का खाना नही खाया।

मम्मी ने भी खाना नही खाया। उनकी झुझलाहट रेणु व नन्दा पर उतर रही थी। मम्मी ने पारिजात को एक बार और समझाने की कोशिश की, ''बेटे, मेरे कहने की तुम्हारी निगाह मे कोई कद्र नही।''

''मुझे खाना नही खाना, कह दिया न बस।'' पारिजात गुस्से से बोला। ''बेटा, जिद नही करते, ले तू 100 रुपये रख ले, मौका लगा तो कल ही मेरठ चलेगे। तेरा सब सामान दिला देगे। देख, तेरी वजह से मैंने भी खाना नहीं खाया।''

पारिजात ने लापरवाही से कहा – ''ठीक हे, ठीक है, ले आओ खाना।'' छुट्टिया खत्म हुईं। पारिजात पुन होस्टल चला गया।

पारिजात के आने पर रेणु व नन्दा उपेक्षित महसूस करते, पापा को तो उसके उद्दड व्यवहार के बारे मे सोचने की फुर्सत नही थी लेकिन मम्मी मन-ही-मन सोचती रहती, चिंतित होती रहती।

सोचते-सोचते उनका सिर दर्द करने लगता। रेणु और नन्दा की वार्षिक परीक्षा आ गयी। मम्मी ज्यादा से ज्यादा समय उन दोनो की पढाई में देने लगी। वार्षिक परीक्षा के बाद पारिजात भी घर आ गया। इस बार उसके तेवर पहले से भी ज्यादा बिगडे थे। शिष्टाचार बिल्कुल भूल गया था।

एक दिन उन सबको पार्टी में जाना था। पापा के दोस्त उनके साथ जाने के लिए पहले ही उनके घर आ गये। मम्मी वगैरा सब तैयार हो गये लेकिन ऐन मौके पर पारिजात ने जाने से मना कर दिया। मम्मी उसे मनाने लगी पर वह नही माना। पापा के दोस्तो के सामने मम्मी की निगाहे शर्म से झुकी जा रही थी। क्रोध को पीकर बोली, ''तुम्हारे कारण सबको देर हो रही है। जल्दी जूते पहनो।''

''कह दिया न, मैं नही जाऊगा।'' पारिजात बोला।

''कोई कारण तो होगा?'' मम्मी ने पूछा।

''मेरा मन नही है।'' पारिजात ने जवाब दिया।

"तुम्हे जाना ही होगा, बेकार इतनी देर से इसके मुह लग रही हो, बैठा लो जबरदस्ती गाडी मे," — पापा झुझला पडे। मम्मी ने भी आखें तरेरते हुए कहा, "सबके सामने यह तमाशा करते तुम्हे अच्छा लगता है? जल्दी जूते पहनो।" पारिजात धीरे-धीरे जूते पहनने लगा।

मम्मी को पारिजात के व्यवहार से बहुत ठेस पहुची थी। रात भर सोचते रहने से उन्हे नीद नही आयी। अगले दिन सोकर उठी तो उनकी तबियत ठीक नही थी। सिर चक्कर खा रहा था। जैसे-तैसे कुछ जरूरी काम निबटाये। दर्द से उनका सिर फटा जा रहा था। वह डाक्टर के पास गयी। पापा को भी वही बुला लिया।

शाम को पापा घर आये। उन्होंने बताया, "तुम्हारी मम्मी की तबियत बिल्कुल ठीक नही है।"

"क्या हुआ उन्हे?" पारिजात ने पूछा।

"तेज सिर दर्द व दिमागी तनाव के कारण डाक्टर को अपना हाल बताते-बताते वह बेहोश हो गयी। डाक्टर का कहना है "पापा बताते हुए रुक गये। "क्या कहना हे डाक्टर का? बताइये न पापा" पारिजात ने अधीरता से पूछा।

"डाक्टर का कहना है कि यह सब दिमागी तनाव से हुआ। तुमने अपनी जिद से मम्मी को इतना परेशान जो कर दिया था। अब अगर मम्मी को कुछ हो गया तो जिम्मेदार कौन होगा।"

"नही, नही, ऐसा मत कहिए। मुझे मम्मी के पास ले चलिए। मैं उनका कहना मानूगा।"— पारिजात ने रुआसी आवाज मे कहा।

पापा बोले— "हा, अभी चलते हैं। नन्दा और रेणु को भी ले चलें।" सभी लोग मम्मी के कमरे मे गये। मम्मी को होश आ चुका था।

"मम्मी, मुझे माफ कर दो, अब में बेकार की जिद कभी नही करूगा।" पारिजात फफक कर रो उठा। मम्मी की आखो से आसू बह निकले। पारिजात को गले से लगाकर उसका माथा चूमा। पारिजात घमड के अधेरे से निकलकर नेकी के उजाले मे आ गया था।

साहस

मेज पर बैग पटकने की ठक्क से आवाज हुई। मम्मी समझ गईं आकाश व आकाक्षा स्कूल से आ गए हैं। आकाक्षा हमेशा ही धीरे से बैग रखती पर आकाश गुस्से में बैग जरूर पटकता।

"मम्मी मैं कहे देता हू-- मुझे इस स्कूल में नही पढना।"

"अरे हुआ क्या?" मम्मी ने मेज पर सलाद की प्लेट रखते हुए पूछा।

"यह देखो।"

"अरे यह तो गूमड पडा है, कहा गिरा तू?"

"मम्मी, भैया गिरा नही इसे रोहित ने धक्का दिया है।" आकाश की जगह आकाक्षा ने जवाब दिया, स्कूल बस में आते समय दोनो एक दूसरे को अपनी सारी बाते बता देते थे।

"कौन रोहित?"

"वही सरीन मैडम का लडका।" आकाश के स्वर मे क्रोध था।

"क्या बात हो गई थी?"

"हिन्दी का पीरियड खाली था, मैडम नही आई थी। मैंने बैग मे से अपनी एक कापी निकाली कि रोहित ने खीच ली। कापी फट गई और उसे पीछे को हटाया, वह डैस्क पर गिर गया और उसने गुस्से में मुझे जोर से धक्का दे दिया। मेरा माथा दीवार से टकरा गया। गुस्सा तो बहुत आया पर चुप रहा।"

"तुमने किसी मैडम या प्रिंसिपल से शिकायत क्यो नही की?"

"वह मैडम का लडका है। उसे जरा-सा डाटकर छोड दिया जाता है। मैंने अगले पीरियड वाली मैडम से कहा तो रोहित ने मेरी बात काट दी और मैडम ने उसे 'आगे से ऐसा न करना' कहकर छोड दिया।"

"यह भी कोई बात हुई, आ पहले तेरी चोट पर हल्दी चूना लगा दू। गर्म दूध पी लेना आराम मिलेगा।"

"गुडिया (आकाक्षा) तुम कपडे बदलकर छोले पुलाव खा लेना, हम और आकाश थोडा रुककर खाएगे।"

मम्मी ने हल्दी चूना व दूध गरम किया, इस बीच आकाश कुछ न कुछ बडबडाता रहा – "पता नही क्या समझता है अपने आपको? अगर मैडम का लडका न होता तो हड्डी-पसली एक कर देता।"

"मैडम का लडका है तो क्या हुआ? गलत बात का विरोध तो करना ही चाहिए।" मम्मी ने गूमड पर हल्दी चूना लगाते हुए कहा।

"मम्मी आप नही जानती स्कूल में मैडम के बच्चों को कोई कुछ नहीं कहता। हमारे क्लास में भी खन्ना मैडम का लडका सबसे ज्यादा शैतानिया करता है। फिर और बच्चो के झूठे नाम लगाकर शिकायत लगा देता है।" आकाक्षा ने भी आकाश की हा में हा मिलाई।

"तुम प्रिंसिपल से शिकायत क्यों नही करते?" मम्मी ने पुन वही सलाह दी।

"प्रिंसिपल का लडका नितिन भी मेरी क्लास में है, वह भी अपनी तडिया झाडता रहता है। हमेशा उसे ही क्लास मानीटर बनाया जाता है, कोई भी स्कूल फक्शन हो उसे जरूर पार्ट दिया जाएगा। लाइब्रेरी की किताबो मे भी सबसे पहले वही मनपसद किताब लेता है।"

"मम्मी आप नही जानती, भैया के क्लास के सभी बच्चे नितिन से आदर के साथ बोलते हैं।"

"मतलब?"

"जैसे नितिन वहा गए थे, उन्होने कापिया बाटी थीं।"

"आकाश! क्या यह सही है।"

"मम्मी, मैं ही क्या सभी बच्चे उससे डरते हैं।"

"लेकिन क्यो? बिना गलती के डरना अच्छी बात नही है। इससे मन में हीन भावना आती है। अन्याय को सहना भी अन्याय है। आकाश! तुमने यह सब मुझे पहले क्यो नही बताया?"

"मैंने एक दिन पापा से कहा था, उन्होने उल्टा मुझे ही डाट दिया कि तुम्हे हमेशा कुछ न कुछ शिकायत रहती है।"

"उन्हे ऐसा नही कहना चाहिए था। अगर मा-बाप ही बच्चे को अन्याय का विरोध करना नही सिखाएगे तो उनमे साहस कहा से आएगा?

आकाश! आइंदा तुम नितिन व रोहित की कभी कोई गलत बात बर्दाश्त मत करना। अपने क्लास के अन्य लडको को भी यही बात सिखाओ। सब मिलकर नितिन व रोहित की बातो का विरोध करो। एकता में बड़ी ताकत है।"

मम्मी के समझाने से आकाश का गुस्सा व तनाव दोनो ही कम हो गए। "आओ बेटे, अब हम लोग भी खाना खा ले, तुम कपडे बदलो मैं खाना लगाती हू।"

आकाश ने अपने साथियो को समझाना शुरू कर दिया था। अब क्लास मे भी दो ग्रुप हो गए थे। एक रोहित व नितिन का, दूसरा आकाश का। नितिन मैडम की अनुपस्थिति मे उछाल-उछाल कर कापिया बाटता तो आकाश टोक देता – "नितिन ठीक से कापिया दिया करो"। "ओह अब मेढकी को भी जुकाम होने लगा है।" नितिन इतराकर कहता।

एक दिन आकाश अपने अकल का उपहार मे दिया हुआ पैन स्कूल ले गया। इन्टरवल में वह अपने दोस्त विवेक को दिखा रहा था कि रोहित ने पैन झटक लिया और उछालने लगा – "रोहित मेरा पैन दे दो वरना अच्छा न होगा।"

"धमकी देता है, देखे इसमे इक भी भरी हे।" कहकर रोहित ने पैन को आकाश पर झटक दिया। आकाश के नए स्वेटर पर इक की छीटे गिर गईं। आकाश ने गुस्से से रोहित की तरफ देखा। रोहित ने पैन देने के लिए फेका पैन डैस्क से जा टकराया, निब टूट गई। आकाश ने पलक झपकते ही रोहित का कालर पकड लिया।

"जा चूहे! मुझसे लडने की हिम्मत करता है।" कहकर रोहित ने आकाश को धकेलना चाहा, पर आकाश ने उसके वार का जोरदार जवाब दिया–"चूहा में नही तू है, आज तुझे बिल में घुसना पडेगा।" दोनो मे गुत्थमगुत्था होने लगी, आकाश रोहित पर भारी पड रहा था, नितिन वहा नही था। अन्य लडको ने आकर बीच बचाव किया।

"आकाश! मैं अभी प्रिंसिपल से जाकर शिकायत करता हू। पनिशमेट मिलते ही अक्ल ठिकाने आ जाएगी।" बडबडाता रोहित प्रिंसिपल के कमरे की तरफ चला गया। आकाश की बहन को भी किसी ने खबर कर दी, वह भी आ गई। कुछ डरपोक लडके कह रहे थे–"आकाश, तुम्हे रोहित से नही

उलझना चाहिए था"— जबकि अन्य लडके शाबाशी दे रहे थे। आकाश तुमने बिल्कुल ठीक किया, कुछ तो अक्ल ठिकाने आए बच्चू की। "आकाश भैया, तुम प्रिंसिपल से साफ-साफ कह देना, डरना नही।" आकाक्षा ने उसकी हिम्मत बढ़ाई।

इन्टरवल खत्म होते ही सब बच्चे क्लास मे आ गए, रोहित नही आया। प्रिंसिपल ने आकाश को बुलाया और पूछा—"तुमने रोहित को क्यो मारा?" "इसने मेरे नए स्वेटर पर इक गिरा दी, और मेरे नए पैन की निब तोड दी, यह पैन मेरे अकल ने मुझे जन्मदिन पर दिया था।"

"क्या यह ठीक है रोहित?"

"मैडम मैंने जानबूझ कर कुछ नही किया। मैं पैन दे रहा था डैस्क से टकराकर निब टूट गई।"

"यह झूठ बोल रहा है, आप और लडकों से पूछिए। इसने जान बूझकर ऐसा किया, इससे पहले भी यह मेरी कई चीजे खराब कर चुका है। एक दिन इतनी जोर से धक्का दिया कि मेरे माथे पर गूमड पड गया। मैं फिर भी आपसे कहने न आया। मैंने इसकी बहुत बातें बर्दाश्त की हैं, अब नही करूगा। मेरी मम्मी कहती हैं अन्याय को बर्दाश्त करना भी अन्याय है।" आकाश ने जोश में बहुत कुछ कह दिया।

"बताओ रोहित। आकाश सच कर रहा है?"

अब रोहित चुप

"लेकिन यह तुम्हारे साथ ही ऐसा क्यो करता है?" प्रिंसिपल ने पुन पूछा।

"मेरे साथ ही नही और लडकों के साथ भी करता है।"

"वह हमारे पास क्यो नही आए?"

"सब इससे डरते हैं — क्योंकि यह सरीन मैडम का लडका है — हम अपनी मैडम से इसकी शिकायत करते हैं तो वह धीरे से डाटकर इसे छोड देती हैं। इससे रोहित का हौंसला बढ़ता है।"

"अच्छा, ऐसा है यह बात हमें आज तक पता नही।" प्रिंसिपल ने आश्चर्य से कहा।

"एक्सक्यूज मी मैडम, नितिन से भी क्लास के सब बच्चे डरते हैं। वह कापिया उछालकर बाटता है, जिससे कापिया फट जाती हैं।"

"अच्छा,वह फिर कभी ऐसा करे तो मुझसे आकर कहना। तुम्हारे साहस की मैं प्रशसा करती हू। रोहित, तुम आकाश से माफी मागो।"

मजबूर होकर रोहित को माफी मागनी पडी।

"रोहित' तुम पूरे पीरियड आफिस के बाहर खडे रहो। ताकि सभी टीचर्स के बच्चो को सबक मिल जाए और नितिन को भी।"

उस दिन पूरे स्कूल में आकाश के साहस की चर्चा रही।

लाल बत्ती

अभिषेक सम्पन्न घर का लडका था। उम्र चौदह वर्ष, सुन्दर, स्वस्थ तथा नवी कक्षा का विद्यार्थी था। अभिषेक निडर और साहसी था साथ ही जिद्दी भी। वह साइकिल चलाने में माहिर था, लेकिन अपनी शक्ति को बेकार के कार्यों मे बरबाद करता था। उसके साथी उसे ऊल-जलूल साहसी कार्यों के लिए उकसाते रहते। एक कहता—'आज फला दीवार फाद कर दिखाओ तो जाने।' दूसरा कहता—'माली के सामने आम तोडकर दिखाओ।' तीसरा कहता — 'सडको पर ही साइकिल चलाते रहोगे अरे हिम्मत है तो पहाडी पर चलाकर दिखाओ।' और अपने साथियो के उकसाने पर अभिषेक खतरा उठाकर ये सब कर दिखाता।

अभिषेक के साथ ही एक लडका पढ़ता था जॉन। वह अभिषेक का मित्र भी था। जॉन सीधे सरल स्वभाव का था, वह हमेशा अभिषेक को समझाया करता — "दोस्त! अपनी ताकत को बेकार के कामो में मत लगाओ। इससे अच्छा रहे तुम अपना झुकाव खेलो की तरफ करो। तुम एक अच्छे एथलीट बन सकते हो और साइकिलिग में एक दिन जरूर चैम्पियन बन जाओगे। सोचो अभिषेक! अभी समय है तुम स्कूल की टीम के कैप्टन भी बन सकते हो। तुम पुरस्कार जीतोगे, तुम्हारा नाम अखबारो में छपेगा।"

"ओह जॉन! तुम नही बदलोगे। हमेशा उसी ढर्रे पर ही चलते रहोगे। अरे इन्सान को अनहोने अनोखे, कुछ नए जोखिम भरे काम करने चाहिए। है किसी में हिम्मत जो पहाडी पर साइकिल चलाए?" अभिषक ने अपनी बाह फडफडाकर और नथुने फुलाकर कहा, तभी उसके अन्य साथी वहा आ गए और तरह-तरह के उदाहरण देकर उसे उकसाने लगे — "अभिषेक यदि वास्तव में साहसी हो तो लाल बत्ती होने पर साइकिल से सडक पार करके दिखाओ।" गोपाल ने कहा।

"देखो, मुझे चुनौती मत दो गोपाल।"

"हम तुम्हें चुनौती ही दे रहे हैं, तभी तुम्हे साहसी मानेंगे।"

"यह कौन बड़ी बात है मैं कल ही तुम्हें ऐसा करके दिखा दूगा, तुम ग्यारह से साढ़े ग्यारह बजे के बीच फला चौराहे पर रहना।"

"ठीक है, याद रखना।" कहकर गोपाल व अन्य साथी अपने-अपन घर चले गए। जॉन ने अभिषेक को बहुत समझाया – "ट्रैफिक के नियमों को तोडना जुर्म है, तेरा चालान हो जाएगा।" किन्तु अभिषेक को अपने पर इतना भरोसा था कि ट्रैफिक पुलिस भी उसे नही पकड सकती। उसने जॉन की एक न मानी।

अभिषेक घर आया तो उसका छोटा भाई मनीष चार्ट बना रहा था। मनीष छटी कक्षा में पढ़ता था लेकिन उसकी आर्ट बहुत अच्छी थी। क्राफ्ट के मॉडल मे वह कई बार इनाम भी जीत चुका था, चार्ट भी अधिकतर उसी का अच्छा बनता था।

'क्या चार्ट बना रहे हो मनीष?' अभिषेक के पूछने पर मनीष ने उसे चार्ट दिखाते हुए कहा – भैया, 'ट्रैफिक के नियम' पर चार्ट बनाने को दिया गया है। देखिए मैंने चौराहे पर सिपाही खडा किया है जो अपने हाथ से इशारा करेगा और खम्बे पर लाल बत्ती, पीली बत्ती, हरी बत्ती बनाई है। लाल बत्ती के आगे लिखना है – रुकिए। पीली बत्ती के आगे – सावधान, और हरी बत्ती के आगे – जाइए।

"यह छोटी-छोटी बातें सब जानते हैं इन पर चार्ट बनाने की क्या जरूरत है?" अभिषेक ने कहा। "बच्चों के लिए यह सब सीखना बहुत जरूरी है।" अभिषेक के पिता ने कमरे में प्रवेश करते हुए कहा – "जानकारी के अभाव मे बहुत से लोग दुर्घटना का शिकार होते हैं।"

"पापा जी टीचर जी कह रही थी, जल्दबाजी के कारण एक्सीडैन्ट होते हैं।" – मनीष ने कहा। "वह भी ठीक कहती हैं जरा देखू, तुम्हारा चार्ट कहा तक बन गया।"

मनीष खुशी-खुशी पापा जी को अपना चार्ट दिखाने लगा। अभिषेक अपने कमरे मे चला गया। चुपचाप जाकर बिस्तर पर लेट गया कल किस तरह क्या करना है यह सोचने लगा। खाना उसने कमरे मे मगाकर ही खा लिया। खाना खाकर कुछ देर को घूमने गया पर जल्दी ही लौट आया। उसके दिमाग में गोपाल का चैलैन्ज घूम रहा था, जिसे हर हालत मे उसे पूरा करना था। तभी मनीष अपना चार्ट पूरा करके उसे दिखाने आया – 'लालबत्ती पर निगाह पढ़ते ही अभिषेक बुरी तरह झुझला गया। मनीष समझ न
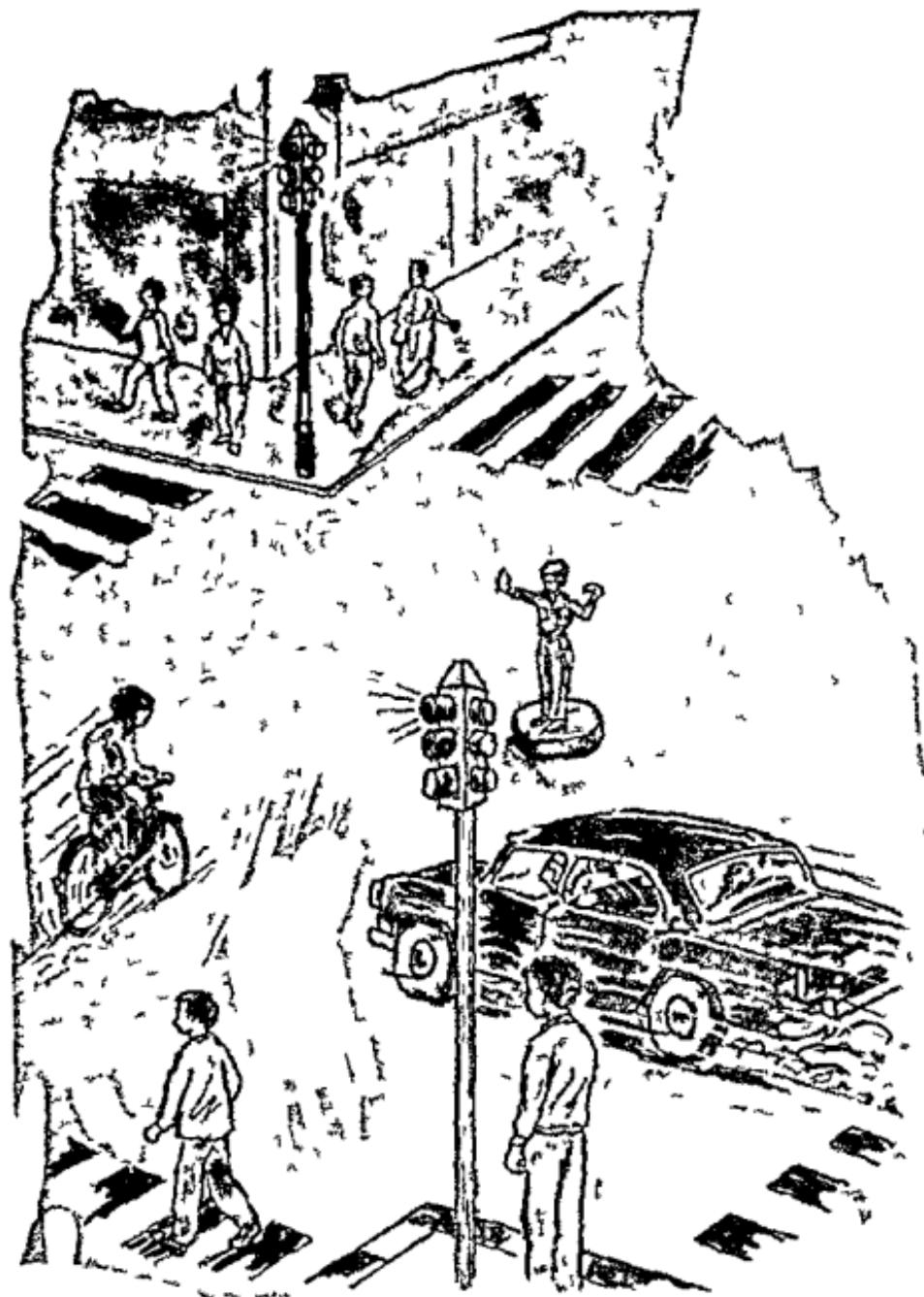
पाया, भैया को क्या हो गया है। वह चुपचाप उसके कमरे से बाहर आ गया।

अगले दिन एक नए जोश के साथ अभिषेक ने साइकिल उठाई और चल दिया। अभिषेक ने कुछ महीने पहले यह नई साइकिल खरीदी थी, जिसकी रफ्तार अभिषक के साहस से मेल खाती थी। ठीक ग्यारह बजकर 10 मिनट पर अभिषेक उस चौराहे पर पहुच गया। उसने गोपाल को वहा खडे देख लिया था। जैसे ही लाल बत्ती हुई अभिषेक ने बिजली की गति से सडक पार की। उसी क्षण एक कार झटके के साथ रुकी, चीख के साथ शोर हुआ। सिपाही सीटी बजाता अभिषेक को पकड न सका। अभिषेक एक गली में घुसकर छिप गया। करीब एक घन्टा वह एक अध-बने मकान में साइकिल सहित छिपा रहा। वह हाफ रहा था और पसीने से तर था। खुशी इस बात की थी कि उसने गोपाल की चुनौती को पूरा कर दिखाया था। अभिषेक सोच रहा था कि अब तक गोपाल ने स्कूल में जाकर सबको खबर दे दी होगी। इन्टरवल तक वह भी स्कूल पहुच जाएगा (अभिषेक का स्कूल शाम की पाली मे लगता था)। स्कूल पहुचते ही सब लडके उसका गर्मजोशी से स्वागत करेगे उसे कधे पर उठा लेंगे।

लगभग तीन घन्टे बाद अभिषेक सीना तानकर स्कूल पहुचा। लेकिन यह क्या? उसका स्वागत तो दूर किसी ने उसकी तरफ मुह उठाकर भी नहीं देखा। सबके मुह लटके हुए थे।

'मैंने तुम्हारी चैलैंज पूरी की। अपनी जान जोखिम मे डाली, और तुम मुह लटकाए हो। क्या बात है गोपाल? बताते क्यों नही? क्या कोई मर गया है?' अभिषेक ने गुस्से मे कहा।

"अभिषेक! जॉन की बहन किट्टी का एक्सीडैन्ट हो गया है।" गोपाल ने बताया।

"कैसे?"

"लाल बत्ती होने पर जब तुमने सडक पार की, तो दूसरी तरफ से आती कार ने कसके ब्रेक लगाए पीछे से आता स्कूटर उस कार से टकराया। उसी स्कूटर पर किट्टी अपने अकल के साथ बेठी थी छिटक कर गिरी, बहुत खैर की भगवान ने बस हाथ की हड्डी टूटी है, पैर मे चोट आई हैं वरना कुछ भी हो सकता था।"

"ओह! यह तो बहुत बुरा हुआ। कहा है किट्टी?"

"अस्पताल मे। मैंने ही यहा आकर खबर की।"

इतने मे ही प्रिंसिपल साहब आ गए, उन्होने अभिषेक को बहुत फटकारा – "नियमों को तोडकर अपनी व दूसरे की जान खतरे मे डालकर तुम कौनसा रिकार्ड बनाने जा रहे थे, अभिषेक?"

"सर! मुझे माफ कर दीजिए, मैं बहुत शर्मिन्दा हू। फिर कभी ऐसे काम नही करूगा।"

"तुमसे मुझे ऐसी उम्मीद नही थी, स्कूल मे तुम्हे यातायात के नियमो का पालन करना सिखाया जाता है और तुम ।" अभिषेक सिर झुकाए खडा रहा,उसकी आखो मे पश्चाताप के आसू थे।

अभिषेक जॉन की बहन किट्टी को अपनी बहन के समान मानता था। प्रिंसिपल साहब से इजाजत लेकर वह अस्पताल गया। किट्टी बेड पर लेटी थी। कोहनी पर प्लास्टर चढ चुका था एक पाव मे भी पट्टी बधी थी। माथे की चोट पर भी बेन्डेड लगी थी। जॉन व उसके मम्मी डैडी वही थे। जॉन दरवाजे पर खडा था। अभिषेक समझ नही पा रहा था कि किस मुह से जॉन से माफी मागे? क्या मुह लेकर किट्टी के सामने जाए। अचानक जॉन की निगाह अभिषेक पर पडी – "अरे अभिषेक, वहा क्यो खडा है, यहा आ न।" जॉन का इतना कहना था कि अभिषेक लपकर कर जॉन के पास गया और भरे गले से माफी मागी – "मुझे माफ कर दे दोस्त। मेरे कारण किट्टी को चोट लगी है। मैं बहुत शर्मिन्दा हू। मैं इसका प्रायश्चित करूगा।"

"जो होना था हो गया अब परेशान न हो। अभिषेक तूने अपनी साइकिल कहा खडी की?"

जॉन के पूछने पर अभिषेक चुप रहा।

"अरे बता न कहा खडी की।" जॉन ने पुन पूछा।

"बेच दी।"

"क्यो? तुझे बहुत प्यारी थी, साइकिल।"

"किट्टी से ज्यादा नही जॉन! साइकिल पर बैठकर मुझे जनून सवार हो जाता था, मैं करतब दिखाने लगता था। उसे बेचना ही मेरा प्रायश्चित है।" अभिषेक की आखो से आसू बह रहे थे। जॉन ने उसे गले से लगा लिया।

अगले दिन किट्टी को अस्पताल से छुट्टी मिल गई। अभिषेक रोज किट्टी से मिलने जाता उसके लिए फल और टाफिया लेकर। किट्टी धीरे-धीरे स्वस्थ हो रही थी और अभिषेक पूरी लगन से परीक्षा की तैयारी कर रहा था।

गाँठ बाधी

चेतना पहली बार अपनी कमला मौसी के गाव आ रही थी। उसने अपनी पढ़ाई दादी बाबा के पास रहकर की और छुट्टियों में मा बाबूजी के पास चली जाती। मौसी के गाव आने का कभी मौका ही न मिला। मौसी चेतना के आने की खबर से बहुत खुश थी। आसपास सबसे कह दिया – "सुन हसा की मा। अरे ओ दीपे की मा। इसी इतवार को मेरी बडी बहन की लडकी चेतना आ रही है। ऐसी हसमुख, ऐसी सुन्दर कि तुम सब देखती रह जाओगी। बिल्कुल अपनी दादी पर गई है। अरे उसकी दादी बुढापे मे भी एकदम खाँड की डली की तरह है। इतनी पढ़ी लिखी होने पर भी चेतना को घमड छू भी नही गया। बस एक बात का डर है "

"वह क्या बहन ?" बडी देर बाद पडौसन के बोलने का नम्बर आया।

"हमारी सास जी की पटरी उससे नही खाएगी" कमला मौसी ने अपना सिर ढकते हुए कहा – "लो याद किया और सास जी आ गई, मैं चली।"

बातों मे चूल्हे की आग बुझ गई थी। मौसी ने फूकनी से फूकर जलाई अपनी बडी बेटी को डाटा भी "बैठी-बैठी किताब पढ़ रही थी, यह न हुआ चूल्हे की आग जला देती।"

कमला मौसी के परिवार मे उनके पतिदेव, तीन लडकिया और सासु जी थी तथा साथ मे दो गाय भी। बडी लडकी रानी सातवी मे, मझली बेला पाचवी मे और सबसे छोटी गुड्डी कक्षा 2 मे पढ़ती थी।

अगले दिन सुबह जब बेला सोकर उठी तो उसे बुखार था। वह स्कूल नही गई। बेला को बुखार आने से कमला परेशान हो गई। बेला को भूख बिल्कुल नही लगती थी। सासु जी घरेलू इलाज कर रही थी। डाक्टर को दिखाने के लिए तैयार न होती। बस भजन कीर्तन मे लगी रहती। चेतना के आने का दिन करीब आ गया। कमला पकवान वगैरा बना ही न पाई।

अकेली क्या-क्या करती बेचारी? निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार चेतना आ गई। मारे खुशी के कमला के हाथ-पाव ही फूल गए — "सफर मे कोई परेशानी तो नही हुई चेतना" — इतना ही पूछ पाई।

"जी नही मौसी जी, मुझे सफर करने की बहुत आदत है।" चेतना ने कहा।

"तुमका अकेले आवत जात डर नाही लागत।" पान लगाते हुए दादीजी ने पूछा।

"डर कैसा दादीजी। लडको से कम हिम्मत नही है हममे।"

कमला चाय नाश्ता ले आई। चाय पीते हुए चेतन्न ने पूछा — "बेला नही दिखाई दे रही मौसी।" "उसे पाच दिन से बुखार है उतर ही नही रहा।" मौसी के बताने पर चेतना चाय का गिलास लेकर ही बेला के पास चली गई। बेला बहुत कमजोर लग रही थी। चेतना ने बेला को गोर से देखकर कहा — "मौसी मुझे तो बुखार के साथ इसे कोई और बीमारी लगती है। पीलिया लगता है।"

"हायराम बहू तुमरी आखन को का हुई गवा। तुमका बेला की आँखिन का पीला पन नाईं दिखाई दिया। नासपीटी हमरी तो आँखिन कमजोर हुई गईं। अब इसकी तरकारी में हल्दी न डलि हो, ना ही ऐका पीला कपडा पहराहियो।"

"दादाजी जी हल्दी खाने से पीलिया नही होता। यह सब मन का बहम है, अंधविश्वास है।" चेतना को बीच में टोक कर मौसी ने पूछा — "पीलिया कैसे होता है?"

"पीलिया एक खास किस्म के कीटाणु (बैक्टीरिया) से होता है। इसमे जिगर प्रभावित होता है जिससे भूख नही लगती। आखें पीली हो जाती हैं। मरीज को कमजोरी बहुत हो जाती है। ऐसे मे रोगी को पूरे आराम की जरूरत होती है। खान-पान मे सफाई होनी चाहिए, साथ ही भोजन रोगी की इच्छानुसार हो। गर्म तासीर की चीजे नही लें।"

"अरे चेतना तू तो पूरी डाक्टर हो गई।" मौसी ने खुशी से कहा।

"डाक्टरी नही पढ़ी तो क्या, पढ़ाई के दौरान हमने आम बीमारियो की जानकारी ली है।" चेतना की बात के जवाब मे दादाजी बोल पडी — "शहरी लडकिनी अपने को बडा होशियार समझती हैं।" बडबडाती हुई दादीजी वहा से चली गईं।

कमला ने दादी के स्वभाव से चेतना को परिचित करा दिया था। रात को सब काम से निबट कर कमला बेला के पास आई। चेतना वहा पहले से बैठी थी। बेला सो गई थी। कमला और चेतना काफी देर तक एक दूसरे के सुख-दुख सुनती सुनाती रही।

सुबह उठने में चेतना को देर हो गई। बाहर आगन का दृश्य देखते ही उसकी सारी सुस्ती उड गई। दादीजी बेला को पकडे बैठी थी। पंडित जी अपने अगोछे से बेला की झाडफूक कर रहे थे। झाडा लगाने के बाद पंडित जी ने एक ताबीज दिया। दादीजी ने धोती के घेरे में बधा दस का नोट निकालकर दे दिया। पंडित जी चले गए। दादीजी ने हाथ का सहारा देकर बेला को बिस्तर पर लिटाया और सीधी (दायी) बाह मे ताबीज बाध दिया।

"दादीजी! ताबीज और झाडफूक से पीलिया ठीक नहीं होगा। इसे किसी अच्छे डाक्टर को दिखाओ।" चेतना चुप न रह सकी।

"देखो बिटिया अपना शहरापा शहर में चलईओ। उमर हुई गई देखते भए, ई रोग पंडित जी के झाडफूक से ठीक होत है।"

"दो साल हुए बडी काकी का पोता इसी बीमारी में चल बसा था।" कमला मौसी का इतना कहना था कि दादीजी जोर से बोल पडी – "कुछउ कहिलो। लम्बी-लम्बी जबान चला लेऊ। क्या सब मरे वाले झाडफूक से मरत हैं।" दादी के तेवर देखकर कमला एकदम चुप हो गई।

बेला की हालत ने चेतना को चिन्ता मे डाल दिया था। मौसा जी अपने व्यापार के सिलसिले में बाहर गए हुए थे। मौसी जी की घर में चलती ही न थी।

पहले चेतना ने अपनी मौसी का ध्यान उनके घर-आगन की गदगी की तरफ खीचा। 'गन्दगी सब बीमारियो की जड है' उन्हें बताया। उसी समय रानी आकर चेतना से बात करने लगी, रानी की बातो से पता लगा कि दादाजी आठवी के बाद उसे नही पढ़ाएगी। लडकियों का ज्यादा पढ़ना वह पसन्द नही करती।

"तीन-तीन जो ठहरी, एक लडका हो जाता तो " मौसी आगे कह न सकी।

"आजकल लडका लडकी बराबर हैं। हमें दादीजी को यह समझाना होगा। रानी तू चिन्ता न कर। आठवी पास करके मेरे पास आ जाना। इस समय हमे बेला के लिए सोचना है।" चेतना ने कहा उधर बरामदे से दादीजी

की आवाज आई – "वहू! पंडितजी पूजा शुरू कर दीन्ह हैं, दो चार दिनमा वेला ठीक हुई जइए।" सबने चुपचाप सुन लिया। दादीजी अपने कमरे में जा पोटली में कुछ ढूढने लगी। बात चेतना के बर्दाश्त के बाहर हो गई। उसने मन ही मन कुछ निश्चय किया मौसी को बताया। मौसी डर रही थी पर चेतना ने हिम्मत बधाई।

सुबह-सुबह दादीजी पड़ौस के गाव के दूसरे पंडित के घर गईं। चेतना ने अपनी योजनानुसार काम किया। दादीजी ग्यारह बजे वापिस आईं – "अरे गगा कब आया तू?"

"अभी-अभी मा।" मौसा जी (गगाप्रसाद) ने जवाब दिया, "बेला और कमला नही दिख रही।" दादी ने रानी से पूछा। "चेतना बेला को अपने शहर ले गईं हैं। साथ मे मा भी गईं हैं।"

"गगा! तू उनका रोक नई सकत रहे।" गुस्से में आग-बबूला हो रही थी दादीजी।

"वह लोग तो सुबह ही चले गए।" गगा प्रसाद मौसा जी ने जवाब दिया।

"ई सब उस चेतना की बच्ची का जादू रहे। वरना कमला की इतनी हिम्मत कि हमसे बिना पूछे चली जाव। हम भी देखत हैं शहर मा जाकर कौन बचाता है बेला को डाक्टर या पंडितजी। गगा जल्दी खाना खाए लो। चले की तैयारी करो। रानी हसा के पास रह जाएगी।"

दादी अपने बेटे गगा प्रसाद के साथ चेतना की मा के घर पहुची तो पता चला चेतना वहा पहुची नही।

"हाय हाय हमारी बेटी—बहू को कहा ले गई?" दादी पोती के प्रति प्रेम का दिखावा कर रही थी कि फोन की घन्टी बज उठी। फोन चेतना का था।

सब लोग अस्पताल पहुचे—"कहा है हमार बिटिया दिखाओ तो हमरा कलेजा फटा जात है।" दादीजी जोर से बोली।

"चुप रहिए दादीजी। दिखावे की जरूरत नही। बेला को गुलूकोज चढ रहा है। वह खतरे से बाहर नहीं हैं। यहा शोर न करे। सब लोग दूसरे बरामदे मे चले जाए।"

दादीजी सहित सब लोग चुपचाप दूसरे बरामदे मे आ गए। कमला रोती जाती कहती जाती – "डाक्टर साहब कह रहे थे अगर आज बेला को न

लाया जाता तो बचाना मुश्किल था। भला हो चेतना का, वही हिम्मत करके बेला को यहा लाई।"

"चुप हो जाओ बेला की मा। रोने से क्या लाभ? हमे बेला के जीवन के लिए दुआए करनी चाहिए।" गगाप्रसाद ने कहा। उसके बाद कोई कुछ नही बोला। सबके चेहरो पर परेशानी थी और मन में प्रार्थना। निगाहे वार्ड की तरफ लगी थी।

"बेला खतरे से बाहर है। डा साहब ने कहा है, चिन्ता की कोई बात नही है।" चेतना की शुभ सूचना से सबके चेहरे खिल गए।

"बिटिया हमका क्षमाकर देव। अब हम पंडितन के चक्कर मा कभी न पडि हैं। लो हमने गाँठ बाध ली।"

"और बेटी बेटे में भी फर्क नही करेंगी, दादीजी इसकी भी गाँठ बाध लीजिए।" चेतना ने कहा – तो दादीजी ने अपनी धोती के पल्लू में दूसरी गाँठ बाध ली। सबके चेहरे खिल गए।

छोटी बहन

निखिल अपनी बहन नूपुर से पाच वर्ष बडा था। जब नूपुर पाच वर्ष की हुई, वह दस वर्ष का था। निखिल बडा जिद्दी था। गुस्सा भी जैसे उसकी नाक पर रखा रहता था। गुस्से में जो चीज हाथ में होती फेंक देता। कई खिलौने उसके गुस्से की भेंट चढ़ गए थे। ये नुकसान जैसे तैसे मा सहन करती रही, किन्तु निखिल का नूपुर को तग करना, उसे रुलाना, मारना मा को बर्दाश्त न होता। तग आकर मा निखिल को पीट देती। पीटने के बाद मा स्वय भी दुखी होती और निखिल घटो रोने का राग अलापता रहता। गुस्से मे स्कूल का काम नही करता। एक दिन का गुस्सा दूसरे तीसरे दिन तक निकालता रहता।

निखिल जब मूड मे होता, बडी अच्छी बातें करता। मा भी उसे समझाती— "देखो बेटा, नूपुर तुझसे कितनी छोटी है, प्यारी गुडिया सी है तब भी तुम उसे तग करते हो, यह अच्छी बात नही है।"

"वह मेरी किताबे क्यो छूती है?" निखिल ने माथे पर त्योरी डालकर कहा।

"अभी वह तुम्हारे बराबर समझदार नही है, तुम्हें अपनी किताबें अलमारी मे सम्भालकर रखनी चाहिए।" अच्छा अब नही मारूगा"। निखिल मा को भरोसा दे देता और दूसरे ही क्षण जरासी बात पर वह नूपुर को 'चल मोटी' कहकर धक्का देता है वह भूल जाता कि अभी मा ने कितना समझाया है।

निखिल के पापा अक्सर 'टूर' पर रहते थे उसके एक चाचा जी थे जो उसके घर से थोडी दूरी पर रहते थे। वह अक्सर उसके घर आते थे वह नूपुर और निखिल दोनो को बहुत प्यार करते थे। पर निखिल का नूपुर को परेशान करना उन्हें भी अच्छा नही लगता था। वह भी निखिल को कई बार

तरह-तरह से समझा चुके थे। निखिल के घर के आसपास कोई पार्क नही था, वह किसी के घर खेलने नही जाता था, कभी कोई पडौसी बच्चा उसके घर खेलने आ जाए वह बात और है। अत स्कूल से आकर वह घर पर ही रहता और नूपुर के साथ खेले बिना भी उसे चैन न पडता।

एक दिन निखिल स्कूल जाते समय अपना बस्ता लगा रहा था। मा रसोई घर मे व्यस्त थी। स्कूल का समय हो गया था निखिल हडबडाहट मे अपनी रबड ढूढ रहा था, रबड नही मिली तो उसने पास खडी नूपुर से जल्दी मे कहा– "ओ नूपुर की बच्ची, जल्दी बता मेरी रबड कहाँ है?"

"मैंने नहीं ली।" नूपुर ने सीधेपन से जवाब दिया।

"जरूर तूने ली है, मुझे देर हो रही है, जल्दी बता नही तो तेरी नई पैंसिल ले जाऊगा, जो चाचा जी ने तुझे दी है।" कहते ही निखिल ने नूपुर की पैन्सिल अपने बैग में रख ली और तेज कदमों से गैलरी से बाहर चला गया।

"मेरी पैन्सिल! मेरी पैन्सिल!" कहती और रोती नूपुर भी उसके पीछे भागी। निखिल जल्दी से भागकर दरवाजे से निकल गया और नन्ही नूपुर ठोकर खाकर गिर पडी।

नूपुर की जोर से रोने की आवाज सुनकर मा भागी आई– "अरे तेरे माथे से खून निकल रहा है कैसे गिर गई?" मा ने जल्दी से घर मे रखी दवाई लगाकर पट्टी बाधी। नूपुर रोते हुए कहने लगी–"मा, भैया मेरी पेन्सिल ले गया।"

"उस शैतान ने नाक मे दम कर रखा है। घर का काम देखू या हर समय तुम दोनो को लिए ही बैठी रहू।" मा की आवाज मे दुखभरी झुझलाहट थी। नूपुर को लेकर डाक्टर के पास गई पट्टी करवाई, दो टाके लगे थे उसे। स्कूल भी न जा सकी।

स्कूल से आने पर निखिल ने नूपुर के माथे पर पट्टी बधी देखी तो मा से पूछा– "इसे चोट कैसे लगी?"

"कैसा अनजान बन रहा है? तेरे ही कारण लगी है, अपनी पैन्सिल लेने के लिए तेरे पीछे भागी थी", मा ने गुस्से मे जवाब दिया। निखिल को चुप देख मा पुन बोली– "चाचा जी आए थे वह भी तुझसे नाराज हैं।"

निखिल ने कान पकडे कि नूपुर को फिर कभी परेशान नही करेगा। नूपुर की चोट के दौरान निखिल ने उसे बहुत ही कम परेशान किया। उसका स्कूल का काम भी करा देता था। सबको विश्वास हो गया कि अब उसकी

शैतानी खत्म हो गई है। लेकिन जैसे ही नूपुर की चोट ठीक हुई निखिल फिर पुरानी शैतानिया दोहराने लगा। मा चिन्तित रहने लगी। निखिल के पापा कुछ दिनों के लिए घर आते तो मा निखिल की शिकायतें कर उन्हें परेशान नही करना चाहती थी। मा ने अपनी चिन्ता निखिल के चाचा जी को बताई। चाचा जी ने उन्हें कोई न कोई उपाय निकालने का आश्वासन दिया। इसी तरह पन्द्रह दिन बीत गए।

एक दिन निखिल स्कूल से वापिस आया तो मा मुह लटकाए बैठी थी। उसने पूछा– "क्या बात है मा?"

"आज नूपुर पेट दर्द के कारण स्कूल नही गइ,"–

"फिर"

"मैंने दवाई आदि दी एक घन्टे में उसे आराम आ गया। लेकिन दोपहर 12 बजे के लगभग वह बाहर गेट पर जाकर खडी हो गई, मैं काम कर रही थी ।"

"फिर क्या हुआ"–निखिल की बेसब्री बढ़ रही थी।

"थोडी देर बाद मैंने बाहर जाकर देखा तो वह वहा नही थी।"

"क्या कहती हो मा? तुमने मौहल्ले में पता नही लगाया?"

"सबसे पूछ लिया कही नही है। तुम्हारे लिए अच्छा हो गया तुम्हें वह सुहाती न थी।" कहकर मा और दु खी हो गई निखिल कुछ नही बोला चुपचाप मा को देखता रहा।

"मैं कहाँ जाऊ? तेरे पापा बाहर गए हुए हैं।" मा ने चिन्तित स्वर में कहा।

"आज शनिवार है चाचा जी घर होंगे मैं उनके पास जाकर नूपुर की बात कहता हू" कहकर निखिल तेज कदमों से चाचा जी के घर की ओर चल दिया। रास्ते में सडक के किनारे उसने अपनी कक्षा के नरेश को खडे देखा, वह अपनी बहन के साथ खडा आइसक्रीम खा रहा था। उसे देखकर निखिल को नूपुर की याद आई, वह और तेजी से चाचा जी के घर की ओर चलने लगा।

बार-बार उसे नूपुर की बातें याद आने लगी। राखी पर नूपुर ने कितने प्यार से उसे राखी बाधी थी। स्कूल से लौटने पर उसे अपने हिस्से की एक टाफी भी देती थीं। नूपुर उसे कितना प्यार करती थी लेकिन वह हमेशा उसे मारता-पीटता रहता था। अब क्या होगा? नूपुर कहा चली गई? कोई उसे

पकडकर तो नही ले गया? क्या पता नूपुर मुझसे नाराज होकर कही चली गई हो।" सोचते-सोचते उसकी आखो में आसू आ गए।

निखिल चाचा जी के घर पहुचा जल्दी से चाचा जी के कमरे में गया और परेशान होकर कहने लगा—"चाचा जी। बारह बजे से नूपुर का कोई पता नही है। मा आस-पास सब जगह उसे ढूढ चुकी है। वह कहाँ चली गइ है?"

"कही चली गई होगी।" चाचा जी ने लापरवाही से कहा फिर निखिल को देखते हुए बोले- "तुम्हारे लिए अच्छा हो गया। तुम्हें खुशी हो रही होगी वह तुमसे लडती थी न?"

"अब मैं उसे कभी तग नही करूगा। चाचा जी प्लीज! मेरी नूपुर को ढूँढ़िए। मुझे राखी कौन बाधेगा? चाचा जी मैं अब नूपुर से कभी नही लड़ूगा।"

"ऐसा तुमने पहले भी कहा था।" चाचा जी के स्वर में क्रोध घुला था।

"मैं कान पकडकर आप से माफी मागता हू चाचा जी। उसे कभी नही मारूगा मुझे माफ कर दो।" कहकर निखिल रोने लगा।

"बस-बस चुप हो जाओ निखिल! आज तुम्हें अपनी गलती पता लग गई। मुझे *आशा है अब तुम कभी नूपुर से नही लडोगे।" कहकर चाचा जी* जोर से हसने लगे।

"चाचा जी आप हस रहे हैं? पता नही नूपुर कहा रो रही होगी।"

"ज्यादा परेशान न हो। बैठो। नूपुर अभी आ जाती है।" और उन्होंने अपनी पत्नी को आवाज देकर नूपुर को लाने के लिए कहा।

चाची के साथ नूपुर को आता देख निखिल हैरान रह गया। "चाचा जी ने बताया— नूपुर को कोई पकडकर नही ले गया था। तुम्हारे गुस्से और शैतानियों से तग आकर मैंने भाभी को यह योजना बताई। मैं बारह बजे नूपुर को अपने घर ले आया। अब तुम समझ गए होगे कि तुम्हे हिल-मिलकर रहना चाहिए। आपस में मिलकर प्रेम-भाव से खेलना चाहिए।"

"हा चाचा जी।" और नूपुर का हाथ पकडकर निखिल घर की ओर चल दिया। रास्ते में उसने अपने जेब खर्च के पैसो से नूपुर को आइसक्रीम खिलाई। सचमुच उस समय निखिल को बहुत अच्छा लग रहा था। मा दरवाजे पर प्रतीक्षा मे खडी थी, दोनों को हिलमिलकर आते देख खुशी से फूली न समाई।

देशभक्त सेनापति

गत बीत चुकी थी। वातावरण शान्त था। तभी इस्माइल खा ने खबर दी–''हुजूर अग्रेजो के जासूस चप्पे-चप्पे पर छाए हैं उन्हें बेताबी से आपकी तलाश है।''

''मैं जानता हू इस्माइल खा।''

''फिर आप '' इस्माइल खा की बात खत्म होने से पहले ही नवाब साहब बोल पडे– ''मैं बेखबर नही हूँ इस्माइल खा। मैं यह भी जानता हूँ कि अग्रेज मुझसे चिढ़े हुए हैं वह किसी भी तरह मेरा किला हथियाना चाहते हैं। मेरे किले के चारों ओर मुह उठाए लगी तोपें उनका दिल दहलाती हैं।'' नवाब साहब का जोश कम न था।

''हुजूर। मुझे एक आदमी से यह भी पता चला है कि अग्रेज आपसे इसलिए नाराज हैं कि आपका दबदबा आस-पास के सभी गावों मे है, और आप ही लोगो को आजादी के लिए भडकाते हैं।'' कहते हुए इस्माइल खा की रगो का खून तेजी से दौडने लगा।

''आजादी की इस आग को यह फिरगी क्या दुनिया की कोई ताकत नही बुझा सकती। अब यह आग मुल्क आजाद होने पर ही बुझेगी।''

''आप ठीक कहते हैं हुजूर। आजादी के लिए कोई भी बलिदान कम है।''

यह दोनो वीर थे मालागढ़ किले का नवाब बलीदाद खा और उसका सेनापति इस्माइल खा। बुलन्दशहर के निकट बह रही काली नदी के पास बलीदाद खा का मजबूत किला था, मालागढ़। जो अग्रेजों की आखों की किरकिरी बन गया था। बहादुर और चतुर बलीदाद खा ने अपनी एक फौज सगठित की थी। उसके मजबूत किले में सुरक्षा के लिए सुरगें थी तथा बारूद से भरे कुए भी थे।

दिल्ली के बहादुर शाह से भी बलीदाद खा की अच्छी निभती थी। बलीदाद खा के रुतबे ने अग्रेज अफसरों की नीद हराम कर रखी थी। वे दिन-रात मालागढ़ के किले पर आक्रमण की योजना बनाते। एक बार बलीदाद खा की फौज से फिरगी फौज मुह की खा चुकी थी। इसीलिए अबकी बार अग्रेज जबर्दस्त मोर्चा लेने की तैयारी में थे। उनकी गुप्त मत्रणाए होती रहती।

और 6 अक्तूबर 1857 को सूरज की किरणों ने धरती को छुआ भी नही था कि अग्रेजो की तोपों के मुह किले पर लावा उगलने लगे। अग्रेजो की एक बडी फौज ने मालागढ़ के किले को चारों तरफ से घेर लिया। बलीदाद खा ने नीद से जागकर ठीक से अगडाई भी न ली थी कि तोपों की दनदनाहट उसके कानों में पडी। मालागढ़ का यह शेर गरजा– " इस्माइल खा "

हुक्म पाते ही इस्माइल खा हाजिर हो गया। नवाब साहब ने उसे तुरन्त गोली चलाने का आदेश दिया।

दोनों तरफ से तोपें आग उगलने लगी धरती से आसमान तक बस आग ही आग। किन्तु दिल दहलाती फिरंगियों की तोपें किले की दीवार न भेद सकी। दो दिन तक मालागढ़ के किले की मजबूत दीवारें अपने मालिक बलीदाद खा का साथ देतीं रही। अपने सीने पर बारूद की मार झेलती रही। शायद दीवारें भी आजादी के इतिहास में अपनी मजबूती लिखाना चाहती थी।

दो दिन की लगातार तोपबारी के बाद किले की दीवारे ज्यों की त्यो सीना ताने खडी रहीं तो अग्रेज सैनिक खिसिया गए। उन सैनिकों का सचालन लैफ्टीनेन्ट 'होप' कर रहा था। उसने चिढ़कर आदेश दिया– "तोपों के मुह तिरछे कर दिए जाए।"

हुक्म का पालन हुआ। अग्रेजो की तोपें पहले से भी ज्यादा जोर से दीवारों पर तिरछी मार करने लगी। दो दिन से लगातार तोप के गोले झेलती सौलह फिट ऊची छह फिट चौडी दीवार में दरार पड गई। इस बात की खबर इस्माइल खा ने फौरन बलीदाद खा को दी।

"चिन्ता न करो। मोर्चे पर तने रहो। मैं अपने परिवार को लावलस्कर के साथ सुरग द्वारा हापुड भेज रहा हू।"

"हुजूर आप भी चले जाइए। यहाँ मैं और इस्माइल खा रह जाएगे।" बलीदाद खा के वफादार सेवक रामसिह ने कहा।

"नही रामसिह। मैं यहाँ तुम लोगों को अकेला छोडकर नही जा सकता। हमें फिरंगियो से हिसाब चुकाना है।" पूरे जोशो-खरोश से वलीदाद खा ने कहा।

"हुजूर! आप चिन्ता न करे। हमें भी आप ही की तरह इस मिट्टी से प्यार है। हम भी दुश्मनों को सवक जरूर सिखाएगे।" इस्माइल खा ने सीना चौडा करते हुए कहा।

रामसिह पर दुश्मन से वदला लेने का जनून सवार था। उसने नवाब साहब से निवेदन किया—"हुजूर! यह बहस त्त समय नही है आप जल्दी से यहा से चले जाइए। फिर सेना सगठित करके शत्रु से बदला लेना इस समय हमें सेवा का मौका दीजिए।" उन दोनों की जिद बलीदाद खा को माननी पडी वह सुरग के रास्ते हापुड आ गया।

तोपें बराबर बारूद उगल रही थी। आखिर किले की बाहरी दीवार टूट गई। इस्माइल खा और राम सिह ने एक दूसरे की तरफ देखा, गले मिले—"खुदा हाफिज दोस्त। आज अपने मालिक का, इस देश की माटी का कर्ज उतारने का मौका आया है।"

"तुम ठीक कहते हो इस्माइल भाई। हमें अपना कर्तव्य याद है। देश की खातिर जान देना हमारी परम्परा है। जयहिन्द।" ,

इतना कहकर दोनों अलग-अलग बारूद के कुए में छिप गए। किले का फाटक टूटते ही अग्रेजों में खुशी की लहर दौड गई। तोपें रुक गई अग्रेज सैनिक खुशी से भागते किले में घुस आए। लैफ्टीनेंट 'होप' तो मारे खुशी के फूला नही समा रहा था "आ हा सब भाग गया,टुम (तुम) लोग किले को लूट लो।" आदेश पाते ही सैनिकों ने लूटपाट शुरू कर दी। लैफ्टीनेन्ट होप बलीदाद खा की गद्दी (सिहासन) पर बैठा घमड से बोला— "न जाने वलीदाद खा किडर छिप गया" (न जाने बलीदाद खा किधर छिप गया) फिर ठहाका मारकर हसा।

इस्माइल खा और रामसिह से अपने दुश्मन की हसी बर्दाश्त न हुई। उन दोनों ने मन ही मन कुरान और गीता को याद किया। आखो ही आखो मे धरती मा को प्रणाम किए और बारूद के पलीतो में आग लगा दी फिर क्या था, पलक झपकते ही लैफ्टीनेन्ट 'होप' का शरीर चिथडे होकर इधर-उधर उछल गया। सारा किला धू-धू कर जल उठा, किले के अन्दर कोई अग्रेज सैनिक जीवित न बचा। वीर सेनापति इस्माइल खा और वफादार राम सिह

नई जिन्दगी

दस वर्षीय चमन एक सरकारी स्कूल के बाहर मूगफली बेचता था। गोरा रग, ऊचा माथा, लम्बी नाक, आखे कुछ छोटी, कद औसत, शरीर इकहरा, घिसी हुई नीली कमीज, खाकी निकर, बिना आस्तीन का पुराना स्वेटर, कुल मिलाकर यही हुलिया था चमन का। हा, पाव मे नीली पट्टी की हवाई चप्पलें भी थी, जो उसने कुछ दिन पहले अपनी कमाई के रुपयों से खरीदी थी। चमन गरीब जरूर था, पर गन्दा नही रहता था। इन्टरवल होते ही बच्चों का रेला चमन के पास आता। चमन पहले से ही पच्चीस व पचास पैसे की पुडिया बनाकर रख लेता जिससे जल्दी-जल्दी सबको दे सके। मूगफली खरीदने वालों मे उसके दोस्त भी होते— 'फला मास्टर जी ने आज क्या पढ़ाया? क्या होमवर्क दिया?' चमन अपने साथियों से पूछता रहता। कभी कोई पुस्तक पढ़ने को ले लेता और छुट्टी होने पर लौटा देता।

'आकाश' प्रतिदिन उसी रास्ते से अपनी गाडी में ड्राइवर के साथ स्कूल से लौटता था। उसकी निगाह रोजाना चमन पर पडती, अकसर चौराहे पर लालबत्ती हो जाने पर उसकी गाडी वहा रुकती तो चमन उसे किताब पढता दीखता, कभी किताब मूगफलियों पर रखी होती और उसकी ललचाई निगाहें स्कूल पर टिकी होती।

आकाश को मूगफली बहुत अच्छी लगती थी। 'ऐ मूगफली वाले, दो पैकेट मूगफली देना'— वह आवाज लगाता। चमन लपक कर आकाश को मूगफली देने आता। चमन मूगफली देने और पैसे लेने के बीच कभी-कभी आकाश से अग्रेजी के एक-दो शब्दों का अर्थ पूछ लेता।

एक दिन आकाश ने चमन से पूछा— "तुम किस कक्षा मे पढ़ते हो?"

"अब कहा पढ़ता हू साब— पहले मैं इसी स्कूल में कक्षा चार तक पढ़ा था।"

"पढ़ाई क्यो छोड दी?"

"एक एक्सीडेंट में बापू की मौत हो गई। मा उनके गम में बीमार रहने लगी। रोजी-रोटी की खातिर स्कूल छोड मूगफली बेचनी पडी। साब! मैं पढ़ना चाहता हू, समझ मे नही आता क्या करू?"

आकाश ने एक कागज पर उसे अपने घर का पता लिखकर दिया--"शाम को आना।"

चमन ने पर्चा पकडते ही आकाश को जोरदार सलाम ठोका। गाडी स्टार्ट हो गई।

शाम को चमन आकाश की कोठी पर पहुच गया। आकाश लॉन में पडी कुर्सी पर बैठा था। चमन भी वही घास पर बैठ गया। आकाश ने उससे बातचीत की। अपनी आसपास की कोठियों में उसे लेकर गया।

चमन को उसी समय तीन कोठियों में गाडी साफ करने का काम मिल गया, प्रत्येक गाडी की सफाई चालीस रुपये महीना तय हुई। आकाश ने अपने घर का सुबह का काम भी चमन को दे दिया।

समय बीतने लगा। आकाश ने चमन को स्कूल में दाखिला दिला दिया। स्कूल शाम की शिफ्ट में लगता था। चमन साफ-सुथरा रहता था। हसमुख और फुर्तीला भी था। धीरे-धीरे उसे सुबह दूध, डबल रोटी, मक्खन वगैरा लाने का काम भी मिल गया। वह सब कोठियों की मालकिनों को खुश रखता। उनके कहने पर बाजार से सामान भी ला देता। प्रत्येक काम के पैसे मिलते। उसने एक पुरानी साइकिल खरीद ली थी, आने-जाने की सुविधा हो गई। चमन दोपहर से शाम तक स्कूल में पढ़ता और रात को स्कूल का काम करता। सुबह दिन निकलते ही आकाश के घर आ जाता। स्कूल जाने में आकाश की मदद करता, उसके कपडे प्रेस करके दे देता। आकाश अपनी पढ़ाई सम्बधी सारा सामान चमन से मगाता और चमन की पढ़ाई में उसकी मदद भी करता।

चमन आकाश का साथी बन गया था। बडे घरों के तौर-तरीके उसने सीख लिए थे। आकाश के माता-पिता भी चमन को पसन्द करते थे। किन्तु आकाश का घरेलू नौकर आकाश से जलने लगा था। उसने माली को भडकाने की कोशिश की लेकिन वह सफल न हो सका।

इस तरह कई साल बीत गए। चमन ने आठवी की परीक्षा दी और आकाश ने बारहवी की। परीक्षा फल निकला, चमन प्रथम श्रेणी में पास
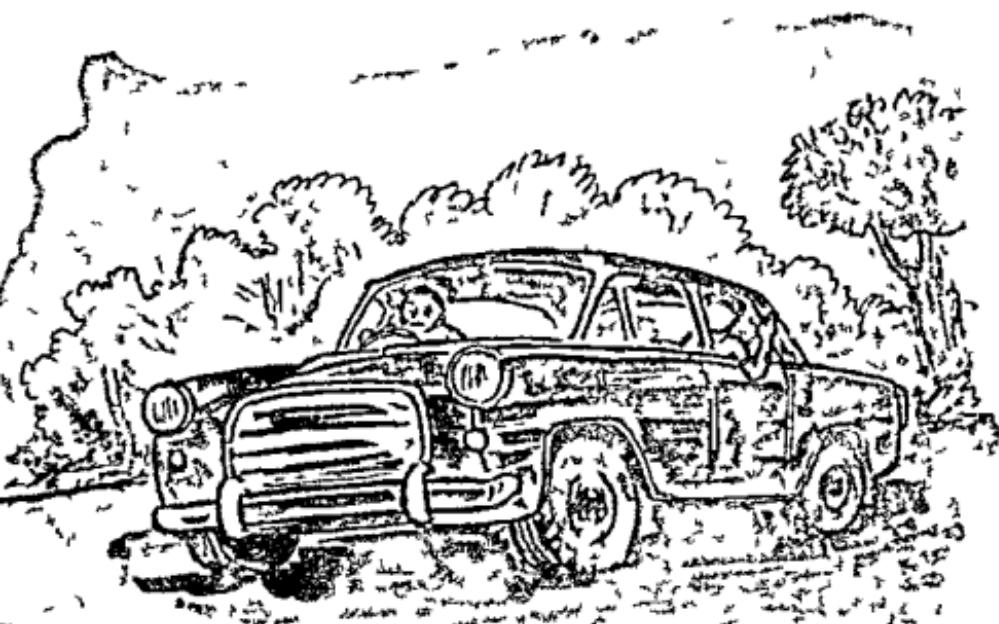
हुआ था। वह यह खुश-खबरी सबसे पहले आकाश को सुनाना चाहता था। भागा-भागा आकाश की कोठी पर गया। हडबडाहट और खुशी में वह गेट से टकरा गया और माथे पर हल्का-सा खून छलक आया। उसकी परवाह किए बगैर वह 'भैया जी-भैया जी' कहता अदर चला गया। वहा सबके तेवर देखकर शब्द उसके गले म अटके रह गए। आकाश और उसके मम्मी-डैडी गुस्से में भरे खडे थे, उनकी क्रोधित निगाहे चमन पर पडी। चमन समझ न पाया, बडी मुश्किल से उसके मुह से निकला— "भैया जी "

"अपनी गन्दी जबान से मुझे भैया मत कह। मैंने तुझे जमीन से उठाकर आसमान पर बिठाना चाहा और तू आस्तीन का साप निकला। जिस थाली मे खाया उसी में छेद किया " गुस्से मे आकाश के नथुने फूल गए।

"क्या गलती हो गई मुझसे?" रुआसा होकर चमन ने पूछा।

"कैसा भोला बन रहा है? आकाश की मम्मी की गले की जजीर चुराते वक्त नही सोचा कुछ। एक झटके मे रईस होना चाहता था।" डैडी गरजे।

"जजीर सच कहता हू, मैंने मा जी की जजीर नही चुराई।" एक दम घबरा गया चमन।

"अरे मार के आगे तो भूत भी भागते हैं, तू अभी बताएगा।"

"आप रहने दीजिए डैडी। इस घर मे मैं इसे लाया था, मैं ही निबट लूगा— बोल कहा है जजीर? मम्मी के कमरे मे तेरे अलावा कोई नही जाता था।"

आकाश चमन को मारता जा रहा था, कहता जा रहा था।

"मैंने जजीर नही ली। चाहे मेरी जान निकाल दो," — कराहते हुए चमन ने कहा।

"सच बता दे चमन। तुझे पैसों की जरूरत होगी तो हम दे देंगे।" मम्मी ने कहा।

"मा जी मैंने जजीर नही चुराई। बाबूजी मैं सच कह रहा हू।" चमन गिडगिडाया।

"आकाश! इसे पुलिस के हवाले कर दो।" डैडी गरजे।

"पुलिस को रहने दो, इसके घर की तलाशी करा लो।"

मम्मी के सुझाव पर डैडी ने फैक्ट्री मे फोन करके अपने एक विश्वासी व्यक्ति को बुलाया। आकाश के सामने चमन के घर की तलाशी ली गई।

चमन की मा की हैरानी का ठिकाना न था, चमन ने उसे समझाया। आसपास के लोग जमा हो गए, आपस मे खुसर-फुसर करने लगे।

तलाशी में कुछ नही मिला। आकाश चमन को चेतावनी देकर चला गया। चमन सारे दिन अपने कोठरीनुमा अस्त-व्यस्त कमरे में पडा रहा। मा भी रोती जाती और कहती जाती— "हम गरीब जरूर हैं पर चोर नही, इतनी बेइज्जती अब तक कभी नही हुई। मैंने पहले ही कहा था कि इन रइसो के चक्कर में मत पड। देखा, उनका असली रूप।"

"कुछ भी हो मा। मैं अपनी पढाई नही छोड़ूगा। मुझे पढ़-लिखकर बडा आदमी बनना है।" इतना कह कर चमन चुप हो गया। बदन मे दुखन थी और मन में दुःख। पर लगन और दृढ़-विश्वास की कमी नही थी।

चमन ने किसी दूसरे स्कूल मे दाखिला ले लिया। उसे वजीफा मिलने लगा था।

तीन महीने बीत गए। एक दिन सध्या समय किसी विवाह पार्टी मे जाने के लिए आकाश की मम्मी ने अपनी भारी साडियो की अटैची खोली और उन्होंने तीन-चार साडिया निकाली। टप्प से कुछ गिरा, उन्होने उठाकर देखा— आखे फटी-की-फटी रह गईं। वही खोई हुई जजीर थी। "पर मैंने शृगार मेज पर रखी थी यह जजीर, अटैची में कहा से चली गई, हो सकता हे जल्दी-जल्दी मे किसी साडी के साथ रखी गई हो। मुझे गलत ध्यान रहा।" मम्मी मन-ही-मन सोचती रही। उन्होंने आकाश को बताया। आकाश को बहुत ही अफसोस हुआ। बेकार चमन पर शक किया और उसे मारा।

वह तुरन्त अपना स्कूटर लेकर चमन के घर गया। आकाश हैरान रह गया। न वहा चमन था और न उसकी मा। उस छोटे से कमरे मे कोई और परिवार था। आसपास पूछने पर पता चला कि उस हादसे से चार-छ दिन बाद ही वे इस कोठरी को छोडकर चले गए। कहा जा रहे हैं— बताया ही नही।

आकाश स्कूल गया तो पता चला कि चमन वहा नही पढ़ता। आकाश स्कूटर लेकर झुगी-झोपडी कालोनियो में घूमता रहा, चमन कही नही मिला। निराश आकाश घर लौट आया। वह आत्म-ग्लानि से दबा जा रहा था। बार-बार चमन का ध्यान आता, सब दिखाई देते, चमन ही कही न दीखता।

धुन के पक्के चमन ने दसवी की परीक्षा भी प्रथम श्रेणी मे पास की। दो

विषयो में विशेष योग्यता भी आई। वह उस दिन वहुत खुश था। मा मौसी के घर गई हुई थी, वह उन्हें खबर करने चल पड़ा। गर्मियों के दिन थे, सडको पर जल्दी सन्नाटा हो जाता था। ऐसी ही एक सुनसान सडक पर उसने एक मोटर साइकिल के पास सफेद रग का स्कूटर खडा देखा। उसका ध्यान उधर खिचा। वही नम्वर था। "आकाश भैया और यहा? पेड की आड में जरूर, दाल में काला है।" चमन ने मन ही मन सोचा, चुपचाप साइकिल खडी की। दवे पाव चला। दो अनजान युवक आकाश को घेरे खडे थे– एक ने चाकू तान रखा था। आकाश उन्हे अगूठी उतारकर दे रहा था। चमन ने एक क्षण भी न गवाया। इस तरह हाथ मारा कि चाकू छिटक कर दूर जा गिरा। लुटेरे हडवडा गए। चमन को देखकर आकाश की हिम्मत वढ़ गई और दोनो ने वदमाशो का डटकर मुकाबला किया। चमन चिल्लाया– 'पुलिस ' 'पुलिस ' घवराहट में आकाश की घडी व अगूठी फेंक कर लुटेरे मोटर साइकिल पर भाग गए। आकाश ने चमन को गले से लगा लिया और माफी मागी।

आकाश के साथ चमन पहले मा को रिजल्ट की खुश-खवरी देने गया। आकाश ने मा से पैर छूकर माफी मागी। मा ने दोनो का मुह मीठा कराया।

आकाश चमन को अपने घर ले गया। मम्मी को सारी घटना सुनाई– "चमन हम बहुत शर्मिंदा हैं, आज तूने मेरे वेटे को नई जिन्दगी दी है, तू न होता तो वह लुटेरे मेरे वेटे को चाकू मार देते।"

"मा जी ऐसा न कहिए– आकाश भैया ने मुझे नई दिशा दी है।"

"चमन तेरे प्रथम आने की खुशी मे हम तुझे नई साइकिल उपहार में देगे, ले लेना। हम अभी लेकर आएगे।"

मम्मी की घोषणा पर आकाश ताली वजाने लगा।

अपनी मेहनत और लगन से पढ़ने वाले चमन को एक दिन अच्छी सरकारी नौकरी मिल गई।

आकाश और चमन की दोस्ती फिर कभी नही टूटी।

धन नहीं नौकरी

जयदेव सस्कृत के विख्यात कवि थे। उनकी भाषा मे भावो की मधुरता थी। गीत गोविंद उन्होने ही लिखा था। कवि होने के साथ-साथ वह भगवान के भक्त भी थे। कविता लिखते या पूजा-पाठ में लगे रहते। एक बार उनके मन में तीर्थ यात्रा का विचार आया। वह अकेले ही तीर्थ यात्रा पर चल दिए। रास्ते में एक नगर पडा। जयदेव धर्मशाला में रुक गए। सुबह उठकर अपने रचे पद गाने लगे। सुनने वालो की भीड लग गई। उसी समय वहा के राजा उधर से जा रहे थे। उनके कानों मे भी कवि की मधुर वाणी पडी। वह रुक गए। सेवकों को अदर भेजा। सेवकों ने कवि को झुक कर प्रणाम किया। जयदेव बोले— "आप लोग कौन हैं?"

"हम राजा के सेवक हैं। हमारे राजा ने आपको बुलाया है। हम आपको लेने आए हैं।"

जयदेव सेवकों का अनुरोध न टाल सके। उनके साथ चल दिए। नरेश ने स्वय उनकी अगवानी की। सुसज्जित आसन पर बैठाकर आदर-सत्कार किया। कहा— "कविवर, मैं आपके गीतो को बडे आनद से पढ़ता हू। आपकी भक्ति-भावना अनूठी है।" जयदेव चलने लगे, तो नरेश ने उन्हे धन से भरी एक पोटली दी। जयदेव ने लेने से इकार किया, तो नरेश ने अनुरोध करते हुए कहा— "कविवर, इस तुच्छ भेंट को स्वीकार करें। आपके द्वारा यह धन साहित्य की सेवा में लगेगा।" राजा के बहुत कहने पर जयदेव ने पोटली ले ली। उसे लेकर वह आगे की यात्रा पर चल दिए।

धन के लालच मे चार डाकू उनके पीछे लग गए। एक जगह सन्नाटा देख उन्होंने जयदेव को धर दबोचा। उन्हें इतना मारा कि सिर चकराने लगा। वह बेहोश हो गए। डाकुओं ने उनके हाथ-पैर बाध, कुए मे डाल दिया। इसके बाद डाकू धन लेकर चले गए।

जिस कुए में जयदेव को गिराया गया, सौभाग्य से वह सूखा था। इसीलिए ज्यादा चोट नही लगी। होश में आते ही वह भजन गाने लगे। इतने तन्मय हो गए कि उन्हें अपने हाथ-पैर बधे होने की भी चिंता न रही।

सयोगवश उस दिन गोडेश्वर राजा लक्ष्मण सेन की सवारी उधर से जा रही थी। राजा लक्ष्मण सेन को कुए के भीतर से किसी के भजन गाने की आवाज सुनाई दी। उन्होंने सवारी रोकने का आदेश दिया। कहा– "देखो, कुए में कौन है?" राज कर्मचारी कुए की तरफ दौडे। रोशनी और रस्सी के सहारे जयदेव को बाहर निकाला। राजा जयदेव को पहचानते थे। कहने लगे– "कविवर, बताइए आपकी ऐसी हालत किसने की?"

"धन के लालच में चार डाकू मेरे पीछे पड गए। उन्होंने ही मेरी यह हालत की। अच्छा ही हुआ, धन ले गए। मैं उस गठरी को कहा-कहा उठाए घूमता।"– कहते हुए उन्होंने पूरी बात बता दी।

राजा लक्ष्मण सेन भी साहित्य प्रेमी थे। पूजा-पाठ और धर्म-कर्म में उनका मन रमता था। जयदेव की विद्वत्ता और भक्ति पर राजा मोहित हो गए। उन्होंने जयदेव को अपनी पचरत्न सभा का प्रधान बना दिया। सभाध्यक्ष का पद भी उन्हें सौंप दिया। जयदेव वही रहकर काव्य-रचना लगने लगे।

समय बीतता रहा। एक बार राजा ने महल मे भोज का आयोजन किया। नगर तथा आसपास के पडोसी राज्यों के साधु-सतो और ब्राह्मणों को निमत्रण भेजे गए। आयोजन की तैयारिया होने लगी। राजा का आदेश था, किसी भी तरह की कोई कमी न रहने पाए। यहा आकर कोई भी भूखा न रहे।

निश्चित दिन काफी सख्या मे साधु-सत और ब्राह्मण आए। वे चार डाकू भी आए, जिन्होने जयदेव को बाधकर कुए मे डाल दिया था। इस समय वे ब्राह्मण के वेश मे थे। ऊचे आसन पर जयदेव को बैठा देख, वे चौंक गए। जयदेव ने भी उनकी तरफ गौर से देखा। वह उन्हे पहचान कर भी अनजान बने रहे। इधर डाकुओ के मन में खलबली मची थी।

"यह आदमी हमे पहचान गया है। जरूर राजा से कहकर हमें पकडवा देगा लगता है, हमे कडी सजा दी जाएगी।" एक ने कहा।

"अब यहा से भागना भी ठीक नही हैं। जो होगा, देखा जाएगा।" दूसरे डाकू ने साथियो को हिम्मत बधाई।

डाकुओ को ब्राह्मण के वेश मे भोजन करते देख जयदेव सोचने लगे– "बेचारे भूखे हें। शायद इनके पास धन नही है। भूख से परेशान होकर ही इस वेश मे आए हें। मुझे इनकी सहायता करनी चाहिए।" तभी राजा वहा आए। जयदेव ने उन चारो की तरफ इशारा करके कहा– "राजन, वे चारा ब्राह्मण मेरे मित्र हैं। आप दक्षिणा में उन्हे अधिक धन देने की कृपा करे।"

"कविवर, आप चिता न करे। उनका पूरा सम्मान होगा। आपके मित्र हैं, इसीलिए हमारे लिए सम्माननीय हैं।"

राजा ने तुरत अपने सेवको को बुलाया। ब्राह्मणो की तरफ इशारा करते हुए कहा– "इन चारो को हमारे अतिथि गृह मे ठहराओ। इन्हे किसी तरह की कोइ परेशानी न हो।"

डाकुओ ने राजा को अपनी तरफ इशारा करते हुए देख लिया। कर्मचारी भी उन्ही की तरफ बढ रहे थे। डाकू भयभीत हो, सोचने लगे– "जरूर पकडे जाएगे।" लेकिन कर्मचारी उन्हे सम्मान-पूर्वक अतिथि गृह मे ले गए। चारो डाकू चकित थे। राजा स्वय अतिथि गृह में पहुचे। चारों को धन से भरी एक-एक थैली दी। राजा ने सोचा– "जयदेव के मित्र भी कवि होगे। उनसे भी कविताए सुनी जाए।" वह बोले– "कविवर जयदेव ने बताया आप उनके मित्र हैं। किसी राजा के दरबार मे आप सब एक साथ रहे होग। हमें कविताए सुनने का बडा शौक है। सोचा, आज आप लोगो से अच्छी-अच्छी कविताए सुनी जाए।"

राजा की बातो से डाकू चकरा गए। तभी उनमे से एक बोला– "महाराज जयदेव ने आपसे झूठ बोला है। हम उसके मित्र नही हैं। जयदेव चोर है। उससे सावधान रहे।"

"जयदेव चोर! क्या कहते हो?"– राजा ने डाटा।

"मैं ठीक कह रहा हू महाराज! जयदेव ने राजा की एक कीमती अगूठी चुराई, पर उसकी चोरी पकडी गई। राजा ने हम लोगो को जयदेव को मौत के घाट उतारने का हुक्म दिया, पर हमने तरस खाकर उसे हाथ-पैर बाधकर कुए मे डाल दिया।" सुनकर राजा परेशान। कुए वाली घटना उनकी आखों के आगे घूम गई। सोचने लगे– "जयदेव ने हमसे झूठ बोला था। क्या डाकू उन्हे लूट कर नही भागे थे?" मगर ब्राह्मण बने डाकुओ की बात उनके गले से नही उतर रही थी। मन मे अनेक सकल्प-विकल्प लेकर वह जयदेव के पास गए। उनको सारी बात कही। सुनकर जयदेव को बहुत

ही दु ख हुआ। उन्होने राजा से कहा– "महाराज, मैं इन डाकुओ को पहचान गया था। इन्हे देखकर मुझे लगा– भूखे हैं, इसीलिए बदला लेने के बजाय, मैंने इनकी सहायता करने की सोची। हम दरबार मे साथ थे, यह भी झूठ है। ये मूर्ख तो पढ़े-लिखे भी नही होंगे। आप परीक्षा लेकर देख लें।"

राजा ने डाकुओ की परीक्षा ली, तो जयदेव की बात सच निकली। अब राजा का चेहरा क्रोध से तमतमा गया। जयदेव से कहा– "तुम जो सजा कहो, इन्हें दी जाए। कहो तो मौत के घाट उतार दिया जाए।"

जयदेव बोले– "राजन, इन्हे क्षमा कर दिया जाए। यह धन भी इन्हें दे दिया जाए। इन्हे पता तो चले, सज्जनता किसे कहते हैं।"

जयदेव की उदारता देख, चारो डाकू उनके पैर पकड कर माफी मागने लगे। उन्होंने राजा का धन लेने से इकार कर दिया। कहा– "महाराज! हमे धन नही, कोई नौकरी चाहिए। हम वायदा करते हैं, अब लूटपाट कभी नही करेंगे।"

जयदेव के कहने पर राजा ने उन चारों को अपने अस्तबल मे नौकरी दे दी।

मेम साव! मैं अच्छा बनूंगा

उसका नाम छोटू था। वह एक बाजार की पार्किंग में स्कूटर व कारें साफ करता था। जब भी कोइ गाडी आकर रुकती, वह लपक कर कपडा लेकर आ जाता। उसने कई बार हमारी गाडी भी साफ की। अनजाने ही उस पर मेरी निगाह टिक जाती। गोरा रग, इकहरा बदन, गजब की फुर्ती और उम्र यही कोई ग्यारह-बारह साल।

एक दिन मैं जैसे ही गाडी से बाहर निकली वह बोला— "मेम साब! मुझे अपने घर नौकर रख लो।"

"घर का काम जानते हो?"

"जो नही जानता, सीख लूगा।"

"तुम्हारे मा-बाप कहा हैं?"

"मेरा कोई नही है मेम साब।" कहकर उसने प्रार्थना भरी नजरो से मुझे देखा, मेरे मन मे दया जागी।

"ठीक है लौटते मे तुम मेरे साथ चलना।" मेरा जवाब सुनकर कई बार खुशी की लहर उसके चेहरे पर दौड गई।

परिवार वालो के मना करने पर भी मैंने उसे घर के काम पर रख लिया। वह हमारे यहा ही खाता-पीता, काम करता और ऊपर म्यानी मे सो जाता। उसके काम में फुर्ती और मन मे सीखने की लगन थी। चाय बनाना, सब्जी काटना, आटा गूदना, उससे आ गए थे। घर की सफाई भी अच्छी कर लेता था। मैंने अपने बेटे के दो-तीन जोडी कपडे उसे दे दिए थे। पन्द्रह दिन बीत गए, सब ठीक-ठाक चलता रहा, उसके बाद वह मुझे कुछ परेशान-सा नजर आया। मैं उन दिनो आवश्यक लेखन मे व्यस्त थी, अत चाहकर भी मैंने उससे कुछ नही पूछा।

एक दिन दोपहर का खाना खाने के बाद हम लोग आराम कर रहे थे। छोटू बाहर बरामदे में रखे गमलों की गुडाई कर रहा था।
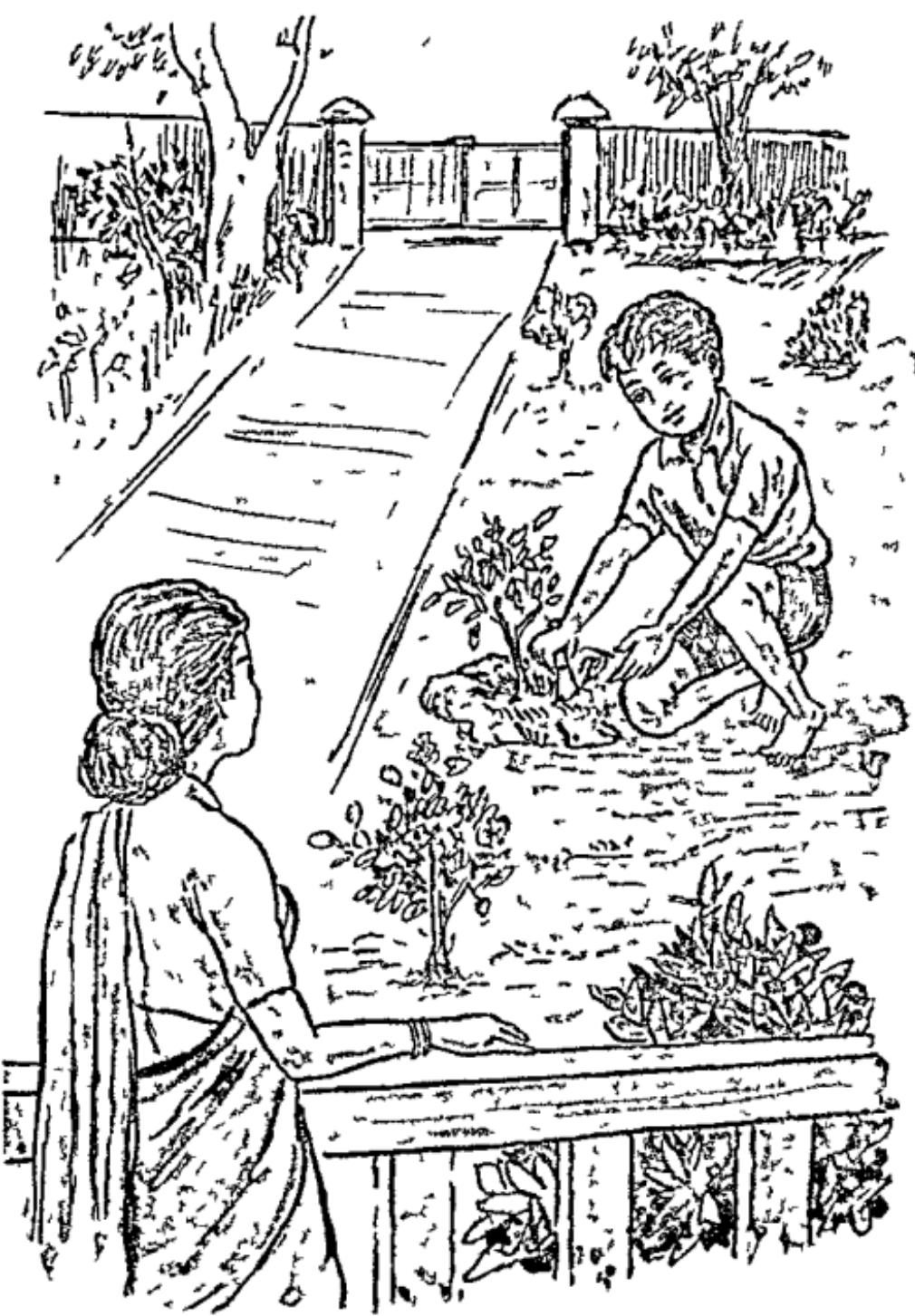
लगभग एक घटा बाद मैं बाहर बरामदे मे आई तो वहा छोटू नही था। मैंने इधर-उधर नजर दौडाई। आसपास के मकान में पूछा, छोटू कही नही था। दो घटे, चार घटे, छ घटे बीत गए, वह नही आया तो मुझे चिता हुई। परिवार वालों ने कहना शुरू किया— "वह भाग गया है, देखो कुछ लेकर तो नही भागा।" घर मे जितने मुह उतनी बाते। सबसे ज्यादा परेशान थी मैं।

गत्ते के बडे डिब्बे में रखे उसके कपडे देखे, बिस्तर देखा। सब कुछ वही था। घर की अलमारिया देखी, सब ठीक था। केवल वही नही था। घर में सबको यही विश्वास था कि पता नही वह कब से रुपये चुराता रहा होगा। "सडक के लडके को घर मे लाना ही नही चाहिए था"— सास जी ने कहा।

"मम्मी इतनी दयालु हैं कि हरेक पर तरस खा जाती हैं।" बेटी ने कहा।

"देख लिया, तरस खाने का नतीजा। गनीमत है उसने बडा हाथ साफ नही किया।" चौदह वर्षीय बेटा भी कहा चुप रहने वाला था।

"बन्द भी करो यह टापिक। जो होना था हो गया। सब लोग आओ चाय पी लो।" मेरे झुझलाने पर सब चुप हो गए, चाय पीने लगे। किन्तु मेरे अन्दर का रोष आसानी से शात न हुआ।

धीरे-धीरे समय बीतता गया, छोटू का ध्यान कम हुआ, लेकिन मन से न गया।

एक दिन बाल-निरीक्षण गृह के बच्चों से मिलने का अनुमति पत्र मुझे मिला और अगले ही दिन मैं बाल-निरीक्षण गृह पहुची।

निरीक्षिका जी के आदेश पर कुछ बच्चों को बुलवाया गया, उनमें छोटू भी था। छोटू को देखते ही मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा। निरीक्षिका जी ने उससे मेरा परिचय कराया, लेकिन वह निगाहें नीची किए खडा रहा।

"चोरी करते पकडे गए न।" मेरे पूछने पर वह चुप रहा। "क्या मैं बराबर वाले कमरे में इससे बात कर सकती हू"— निरीक्षिका जी से अनुमति मिलने पर मैं छोटू तथा दो अन्य बच्चो के साथ बराबर वाले कमरे मे चली गई।

"क्यो भागा था हमारे घर से? क्या लेकर भागा था?" मैंने सीधे पहले यही पूछा।

"कुछ नहीं, मेरा विश्वास करो मेम साब। आप आज मेरी कहानी सुन लो।" वह गिडगिडाया।

"मेरे घर क्यों नही सुनाई?"

"शुरू में मेरी हिम्मत नही हुई, फिर मुझे पता नही था कि मरे साथी वहा तक पहुच जाएगे।"

"कैसे साथी? कौन साथी?" मैंने आश्चर्य से पूछा।

"मेम साब! मैं काबुल का रहने वाला हू, हम आठ भाई-बहन हैं। मेरे पिता कापी-पेंसिल आदि की छोटी-सी दुकान करते थे। खर्चे की सदा परेशानी रहती थी, पिता की अचानक मृत्यु हो गयी और हम बेसहारा हो गए। बडा भाई दुकान पर बैठा, उससे दुकान चलानी न आई। बडी मुश्किल से घर का खर्च चलता।

"तुमने स्वय को अनाथ बताया था"— मैं बीच मे ही बोली।

"क्या कहता? इतने महीने हो गए, मेरी मा ने मेरी कोई खैर-खबर न ली। इतने सारे भाई-बहन होने के कारण मा सबका ध्यान नही रख पाती थी, मुझे पढ़ने नही भेजा गया। मैं सडकों पर घूमता रहता था। वहा के (काबुल के) पठान मुझे पठान बनाना चाहते थे।"

"तुम्हें ही क्यों?" मैंने पूछा।

"क्योंकि मैं फटेहाल, आवारा-सा, इधर-उधर घूमता रहता था। मा मुझे पठान नही बनाना चाहती थी, अत उसने मुझे यहा दिल्ली मे रह रहे रिश्ते के एक चाचा के पास भेजने की सोची। एक सरदार जी दिल्ली आ रहे थे, मा ने मुझे उन्ही के साथ भेज दिया और वह अपने फरज (फर्ज) से छुट्टी पा गईं।" कहते-कहते उसकी आखें गीली हो गईं। "उसके बाद "

"कुछ महीने सरदार जी ने मुझे अपने साथ रखा, मैं उनकी छोटी बेटी को, बच्चा गाडी मे पार्क वगैरा मे घुमाता, फिर उन्होंने मुझे चाचा के घर भेज दिया। चाची का व्यवहार मेरे साथ अच्छा नही था, वह मुझे भरपेट खाना भी न देती, जब तब मेरी मा को कोसती, बुरा-भला कहती। उसके घर मे मेरा दम घुटता। मैं सडकों पर घूमता रहता और एक दिन सडको पर आवारागर्दी के जुर्म मे मैं पकडा गया, मुझे इसी निरीक्षण गृह मे लाकर रखा गया। तीन महीने बाद चाचा मेरी जमानत कराकर ले गया।"

"फिर क्या हुआ?"

"चाचा के घर जाकर मैं बीमार पड गया, मुझे भूख बिल्कुल नही लगती थी, पता चला मुझे पीलिया रोग हो गया था। चाचा ने मुझे अस्पताल मे भर्ती करा दिया, चाची मुझे अस्पताल मे देखने भी न आई, कभी-कभी चाचा आते और एक दो रुपया मुझे दे जाते, मेरे ठीक हो जाने पर कोई मुझे लेने न आया

अस्पताल वाले मुझे अकेले को छुट्टी देना नही चाहते थे। मौका पाकर मैं एक दिन अस्पताल से भाग गया।"

"भागकर चाचा के घर गया?"

"नही, वहा मेरा दम घुटता था।"

"फिर कहा गए?"

"मैं झुग्गी-झोपडियों की तरफ गया। वहा घूमते-घूमते मुझे तीन लडके मिले, वे कबाडी का काम करते थे। मैं भी उनके साथ सडकों से चूना और कागज बीनने लगा। मैं उन्ही के साथ खाता-पीता और रात को फुटपाथ पर सो जाता। बाद मे मुझे पता चला कि वे चोरी भी करते हैं। वे मुझे भी चोरी करना सिखाने लगे, एक दिन उन सबके कहने से मैंने एक कोठी के नल से पीतल की टोटी निकाली, लेकिन मुझे बिल्कुल अच्छा नही लगा, मैंने मेहनत करके रोटी कमाने की सोची। एक रात मैं चुपके से उनसे अलग हो गया और उनसे बहुत दूर उस पार्किंग मे स्कूटर और कारे साफ करनी शुरू कर दी। लेकिन एक दिन " कहते हुए उसके चेहरे के भाव बदल गए।

"क्या हुआ?" मैंने पूछा।

"उनमे से एक लडके ने मुझे ढूढ निकाला और मुझे फिर चोरी करने के लिए उकसाने लगा। मैंने मना किया। वह अगले दिन फिर आया चोरी की एक योजना भी बनाकर लाया। जैसे-तैसे उस दिन मैंने उसे टाला। किस्मत से आप मुझे मिल गईं, मैं आपके साथ चला गया। आपके घर पहुच कर मुझे बडी राहत मिली। मैं अपने को वहा सुरक्षित समझता था। लेकिन बदकिस्मती ने मेरा पीछा नही छोडा।"

"तुम मेरे घर से भागे क्यों?" मेरे शब्दों मे गुस्सा घुल गया।

"वही बताने जा रहा हू मेम साब। मैं एक दिन सुबह आपकी कोठी से ब्रेड व अण्डे लेने के लिए निकला, थोडी दूर चलकर मुझे मेरा वही साथी दिखाई दिया, मैंने छिपने और भागने की कोशिश की, पर उसने मुझे पकड लिया, एक थप्पड मारता हुआ बोला– साले! रइसों की रोटिया लग गई हैं, यहा पैरो में छाले पड गए तुझे ढूढते-ढूढते।"

"देख दादू (वह सबसे बडा था, हम सब उसे दादू कहते थे) मुझ पर रहम कर, मैं तेरे रास्ते पर नही जाना चाहता।" मैंने उसके पैर पकड लिए, वह बोला– "अपने साथ चलने को कौन कहता है रे, अपनी मेम साब की कोठी में हाथ साफ कर।"

"नही, नही– यह मुझसे नही होगा, कभी नही होगा।"

"तुझे यह करना होगा, सोच लेना, मैं कल फिर आऊगा।"

"कोठी पर मत आना"– मैंने घबराकर कहा।

"तो मुझे यही मिलना।" कहकर वह चला गया। में बेहद परेशान हो गया।

मुझे ध्यान आया कि जाने से तीन-चार दिन पहले छोटू कुछ परेशान-सा दिखता था।

"अगले दिन वह आया?" मैंने पूछा

"हा, वही मिला, मैंने उसे चोरी न कर सकने की मजबूरी बताई तो वह बहुत गुस्सा हुआ, मुझे गालिया दी और धमकी देकर गया।

"कैसी धमकी?" मैंने पुन पूछा।

"यही कि अगर तू चोरी करने को राजी न हुआ तो तेरी मेम साब को सब बता दूगा। तेरा झूठा नाम लगा दूगा कि तूने चोरी की है।"

उस दिन दोपहर को मैं गमलों की गुडाई कर रहा था, वह अचानक आ गया। उसे कोठी पर देखकर मेरा खून जम गया। आते ही बोला–"बोल तैयार है या नही, वरना अभी शोर मचाता हू कि तूने चोरी की है या तू मेरे साथ चल।"

"मजबूर होकर आपको बिना बताए मैं उसके साथ चला गया। मेम साब! मैं आपकी बहुत इज्जत करता हू।"

छोटू के जाने का सच पता लगते ही मैं पानी-पानी हो गई, सारा क्रोध जाता रहा, मैंने कहा– "किसी समय आकर कारण तो बता जाता।"

"कैसे आता? किस मुह से आता? मेरे उस साथी ने मुझे जेब काटने पर मजबूर किया। अनाडी था, केवल दो रुपये की जेब काटी और पकडा गया, पुलिस ने यहा भेज दिया।"

"यहा से कहा जाओगे?"

"यहा एक माली है, वह मुझे अपने बेटे की तरह मानता है, वह मुझे अपने घर ले जाएगा, मैं अच्छा बनूगा मेम साब! मेहनत से पैसे कमाऊगा।"

छोटू की आखों में नए सपने देखकर मेरे पास कहने को कुछ नही रह गया था। मन-ही-मन मैंने उसके उज्जवल भविष्य के लिए दुआ की।

दो शब्द लिखने के बहाने

हिन्दी का बाल साहित्य आज भी अपने उपयुक्त स्थान की प्रतीक्षा में है। उसका न सही मूल्याकन हो पाता है और न ही बाल साहित्य के लेखकों को अन्य विधाओ के लेखको की तरह समुचित सम्मान दिया जाता है। हमे यह कहने मे जरा भी सकोच नही कि हिन्दी साहित्य के भावी इतिहास–लेखको ने यदि बाल साहित्य को अपने ग्रथो मे सम्मिलित नही किया तो उनका इतिहास अधूरा रहेगा। वे न केवल अपनी कलम के साथ बल्कि नन्हे मुन्नो की दुनिया के साथ भी अन्याय करेंगे।

श्रीमती विमला रस्तोगी की इस पुस्तक पर दो शब्द लिखने के बहाने कुछ कटु सत्य और तथ्य स्वत अवतरित हो गए। अक्षरो की यह अन्तर्ध्वनि शायद निश्चित लक्ष्य पाने मे समर्थ हो सके और विमला जी की यह पुस्तक भी इस ध्वनि को और अधिक मुखर कर सके।

इस पुस्तक की कहानिया पढ़ने के बाद मुझे ऐसा लगा कि लेखिका ने एक ओर भारत की प्राच्य सास्कृतिक धरोहर से अपनी कहानियो की कथावस्तु से रग भरे हैं तो कही आज के जीवन से छोटी-छोटी बातों को लेकर बच्चों के लिए कथासूत्र जोडे हैं। विमला जी अनवरत लिख रही हैं और अनवरत लेखन से अच्छा पुरस्कार और क्या होगा।

मुझे आशा है यह पुस्तक बच्चो, विशेष रूप से किशोरो को स्वस्थ पथ पर आगे बढने की प्रेरणा भी देगी।

(डा श्याम सिह शशि)

विमला रस्तोगी

जन्म सम्भल, जिला मुरादाबाद (उ० प्र०) मे
शिक्षा एम० ए० हिन्दी एव अर्थशास्त्र
प्रकाशित पुस्तकें—

4 बाल कहानी-सग्रह तथा कई कहानी, कविताए सकलनों मे सगृहीत

अखिल भारतीय बाल कहानी प्रतियोगिता मे कहानी 'छोटी-छोटी बातें' पुरस्कृत।

विद्यार्थी जीवन से लेखन के प्रति रुचि रही। तब से आज तक साहित्य की प्रत्येक विधा पर लेखनी सक्रिय है। मुख्य रूप से गत 15 वर्षों से निरन्तर लेखन। हिन्दी के सभी विशिष्ट (राष्ट्रीय स्तर की) पत्र पत्रिकाओ मे लगातार कहानी, कविता, लेख, साक्षात्कार, व्यग्य प्रकाशित। आकाशवाणी और दूरदर्शन पर नियमित रूप से कहानी, नाटक, प्रहसन, वार्ताए आदि प्रसारित।

अब तक 100 बाल कहानिया (60 बड़ो की कहानिया, 26 नाटक एव प्रहसन, 20 व्यग्य तथा 100 से अधिक लेख, साक्षात्कार, कविताए तथा परिचर्चाए आदि प्रकाशित। हरिश्चन्द्र बधु तथा 'दोमा' के सम्पादकीय विभाग से सबद्ध।

सम्पर्क सूत्र 'आयाम' 127, गगन विहार, दिल्ली-51